हिंदी

कक्षा – 5

राजकीय विद्यालयों में निःशुल्क वितरण हेतु

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

प्रकाशक

राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

www.rajteachers.com

संस्करण : 2016

© राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर
© राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल, जयपुर

मूल्य :

पेपर उपयोग : आर. एस. टी. बी. वाटरमार्क
80 जी. एस. एम. पेपर पर मुद्रित

प्रकाशक : राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल
2–2 ए, झालाना डूंगरी, जयपुर

मुद्रक :

मुद्रण संख्या :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना इस प्रकाशन के किसी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रानिकी, मशीनी, फोटोप्रतिलिपि, रिकॉर्डिंग अथवा किसी अन्य विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा उसका संग्रहण अथवा प्रसारण वर्जित है।
- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर, पुनर्विक्रय या किराए पर न दी जाएगी, न बेची जाऐगी।
- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टिकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य गलत है तथा मान्य नहीं होगा।
- किसी भी प्रकार का कोई परिवर्तन केवल प्रकाशक द्वारा ही किया जा सकेगा।

पाठ्यपुस्तक निर्माण
वित्तीय सहयोगः
यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर

www.rajteachers.com

प्राक्कथन

बदलती हुई परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा में परिवर्तन होना जरूरी है, तभी विकास की गति तेज होती है। विकास में सहायक कई तत्वों के अलावा शिक्षा भी एक प्रमुख तत्व है। विद्यालयीय शिक्षा को प्रभावशाली बनाने के लिए पाठ्यचर्या को समय–समय पर बदलना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 तथा निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा अधिकार अधिनियम 2009 के द्वारा यह स्पष्ट है कि समस्त शिक्षण क्रियाओं में 'विद्यार्थी' केन्द्र के रूप में हैं। हमारी सिखाने की प्रक्रिया इस प्रकार हो कि विद्यार्थी स्वयं अपने अनुभवों के आधार पर समझ कर ज्ञान का निर्माण करे। उसके सीखने की प्रक्रिया को ज्यादा से ज्यादा स्वतंत्रता दी जाए, इसके लिए शिक्षक एक सहयोगी के रूप में कार्य करे। पाठ्यचर्या को सही रूप में पहुँचाने के लिए पाठ्यपुस्तक महत्त्वपूर्ण साधन है। अतः बदलती पाठ्यचर्या के अनुरूप ही पाठ्यपुस्तकों में परिवर्तन कर राज्य सरकार द्वारा नवीन पाठ्यपुस्तक तैयार कराई गई है।

पाठ्यपुस्तक तैयार करने में यह ध्यान रखा गया है कि पाठ्यपुस्तक सरल, सुगम, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य एवं आकर्षक हो, जिससे विद्यार्थी सरल भाषा, चित्रों एवं विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात् कर सकें। साथ ही वह अपने सामाजिक एवं स्थानीय परिवेश से जुड़े तथा ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक गौरव, संवैधानिक मूल्यों के प्रति समझ एवं निष्ठा बनाते हुए एक अच्छे नागरिक के रूप में अपने आप को स्थापित कर सके।

शिक्षकों से मेरा विशेष आग्रह है कि इस पुस्तक को पूर्ण कराने तक ही सीमित नहीं रखें, अपितु पाठ्यक्रम एवं अपने अनुभव को आधार बनाकर इस प्रकार प्रस्तुत करें कि बालक को सीखने के पर्याप्त अवसर मिले एवं विषय शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान (एस.आई.ई.आर.टी.) उदयपुर पाठ्यपुस्तक विकास में सहयोग के लिए उन समस्त राजकीय एवं निजी संस्थानों, संगठनों यथा एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली, राज्य सरकार, बिहार सरकार, उत्तराखण्ड सरकार, राजस्थान राज्य पाठ्यपुस्तक मण्डल जयपुर, विद्याभवन उदयपुर का पुस्तकालय एवं लेखकों, समाचार पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशकों तथा विभिन्न वेबसाइट्स के प्रति आभार व्यक्त करता है, जिन्होंने पाठ्यपुस्तक निर्माण में सामग्री उपलब्ध कराने एवं चयन में सहयोग दिया। हमारे प्रयासों के बावजूद किसी लेखक, प्रकाशक, संस्था, संगठन और वेबसाइट का नाम छूट गया हो तो हम उनके आभारी रहते हुए क्षमा प्रार्थी हैं। इस संबंध में जानकारी प्राप्त होने पर आगामी संस्करणों में उनका नाम शामिल कर लिया जाएगा।

पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने हेतु श्री कुंजीलाल मीणा, शासन सचिव, प्रारंभिक शिक्षा, श्री नरेशपाल गंगवार, शासन सचिव, माध्यमिक शिक्षा एवं आयुक्त राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद्, श्री बाबूलाल मीणा, निदेशक प्रारंभिक शिक्षा, श्री सुवालाल, निदेशक माध्यमिक शिक्षा एवं श्री बी. एल. जाटावत, आयुक्त, राजस्थान प्रारम्भिक शिक्षा परिषद्, जयपुर।

www.rajteachers.com

राजस्थान सरकार का सतत् मार्गदर्शन एवं अमूल्य सुझाव संस्थान को प्राप्त होते रहे हैं। अतः संस्थान हृदय से आभार व्यक्त करता है।

इस पाठ्यपुस्तक का निर्माण यूनिसेफ के वित्तीय एवं तकनीकी सहयोग से किया गया है। इसमें सेम्युअल एम., चीफ यूनिसेफ राजस्थान, जयपुर, सुलग्ना रॉय, शिक्षा विशेषज्ञ एवं यूनिसेफ से संबंधित अन्य सभी अधिकारियों के सहयोग के लिए संस्थान आभारी है। संस्थान उन सभी अधिकारियों एवं कार्मिकों का, जिनका प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से इस कार्य संपादन में सहयोग रहा है, उनकी प्रशंसा करता है।

मुझे इस पुस्तक को प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास है कि यह पाठ्यपुस्तक विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी और अध्ययन–अध्यापन एवं विद्यार्थी के व्यक्तित्व विकास की एक प्रभावशाली कड़ी के रूप में कार्य करेगी।

विचारों एवं सुझावों को महत्त्व देना लोकतंत्र का गुण है। अतः राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर सदैव इस पुस्तक को और श्रेष्ठ एवं गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझावों का स्वागत करेगा।

निदेशक

राजस्थान राज्य शैक्षिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण संस्थान, उदयपुर

www.rajteachers.com

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति

संरक्षक	:	विनीता बोहरा, निदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
मुख्य समन्वयक	:	नारायण लाल प्रजापत, उपनिदेशक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
समन्वयक	:	वनिता वागरेचा, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
लेखन समिति	:	यशोदा दशोरा, प्रधानाध्यापिका, रा.बा.उ.प्रा.वि. प्रतापनगर प्रथम उदयपुर, (संयोजक)
		दिनेश वैष्णव, सन्दर्भ व्यक्ति, डाइट, बाराँ
		डॉ. गोविन्दनारायण कुमावत, प्रधानाचार्य रा.उ.मा.वि. ड्योढ़ी, जयपुर
		तोषी सुखवाल, अध्यापिका, के.जी.बी.वि. मावली, उदयपुर
		विमलेश कुमार शर्मा, अध्यापक, रा.प्रा.वि., ढाणी रामगढ़, सवाई माधोपुर
		शिवमृदुल, से.नि. व्याख्याता, चित्तौडगढ़
		मीनाक्षी शर्मा, अध्यापिका, रा.बा.उ.प्रा.वि. जवाहरनगर,उदयपुर
		राजेश गहलोत, प्रधानाध्यापक, आदर्श विद्यामंदिर, पाली
		डॉ. कृष्णकांत चौहान, अध्यापक, रा.उ.प्रा.वि. लकापा, सलूम्बर, उदयपुर
		हरिवल्लभ बोहरा, प्रधानाचार्य, रा.उ.मा.वि. छत्रैल, जैसलमेर
आवरण एवं साज सज्जा	:	डॉ. जगदीश कुमावत, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी, उदयपुर
चित्रांकन	:	किशोर मीणा, स्वतंत्र कलाकार, जयपुर
तकनीकी सहायक	:	हेमन्त आमेटा, प्राध्यापक, एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
		दीपिका तलेसरा, क.लि., एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
		अभिनव पण्ड्या, क.लि., एस.आई.ई.आर.टी., उदयपुर
कम्प्यूटर ग्राफिक्स	:	सिमेटिक्स माईनिंग प्रा.लि., देहरादून, उत्तराखण्ड

www.rajteachers.com

शिक्षकों से...

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2005 की रूपरेखा को आधार मानते हुए बच्चों के बौद्धिक, शैक्षणिक, सामाजिक सद्भाव, शारीरिक विकास, जीवन मूल्यों एवं राष्ट्रीय भावनाओं को विकसित करने सहित भाषा के माध्यम से बालक/बालिकाओं के सर्वांगीण विकास हेतु कक्षा 3, 4 व 5 के लिए समृद्ध सामग्री का चयन किया गया है।

पाठ्यसामग्री में विशेष रूप से प्रकृति प्रेम, देशप्रेम, भावनात्मक एकता, सामाजिक चेतना, संवेदनशीलता, महिला सशक्तीकरण, जेंडर संवेदनशीलता, सांस्कृतिक गौरव, पर्यावरण संरक्षण, आपसी प्रेम, स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता, श्रम व कार्य के प्रति सम्मान, लोकतांत्रिक मूल्यों का विकास, सामाजिक सरोकारों के प्रति सजगता, शिष्टाचार आदि को सम्मिलित किया गया है।

विविधताओं को समेटने हेतु विषयगत एवं विधागत दोनों ही रूपों के समावेश का प्रयास है। इसमें कहानी, कविता, संवाद, आत्मकथा, खेल, वृतांत, निबंध आदि विधाओं को सम्मिलित करने हेतु जीवंत चित्रों के माध्यम से पाठ्यसामग्री को सुरुचिपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है।

भाषाई विकास की समग्रता को ध्यान में रखते हुए पाठ में प्रयुक्त कठिन शब्दों के अर्थ दिए गए हैं और उच्चारण की दृष्टि से स्पष्ट उच्चारण करने हेतु शब्दों का चयन कर यथास्थान अभ्यासार्थ भी दिया गया है।

स्वयं की सोचने की क्षमता व मौखिक अभिव्यक्ति के विकास के लिए सोचें और बताएँ दिया गया है, जिसके माध्यम से पाठ को ध्यान में रखकर प्रश्नों का मौखिक उत्तर दे सकें, ऐसा प्रयास किया गया है। साथ ही खोजने की प्रवृत्ति और लिखित अभिव्यक्ति के विकास हेतु 'रिक्त स्थानों की पूर्ति' को दिया गया है। पाठ में वर्णित सभी संदर्भों का पुनः स्मरण कर स्वविवेक के आधार पर प्रश्नों के लिखित उत्तर दे सकें।

'भाषा की बात' के माध्यम से पाठ में प्रयुक्त व्यावहारिक व्याकरण का ज्ञान हो सकेगा। व्याकरण संबंधी जिज्ञासा का समाधान शिक्षक के माध्यम से कराया जाना अपेक्षित रहेगा।

बच्चों में तार्किक चिंतन का विकास अनुभवों को व्यापकता देने, परिवेश से जोड़ने, कल्पनाओं को विस्तार देने, संकलन की प्रवृत्ति, विषय वस्तु एवं बाहरी परिवेश के माध्यम से सृजनशीलता के विकास हेतु भी विविधरूपेण गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है।

बहुभाषिकता को सुदृढ़ संसाधन के रूप में समझते हुए हिंदी भाषा के शब्दों का सरलतम रूप एवं स्थानीय बोली के शब्दों के साथ समझाने का प्रयास किया गया है। प्रस्तुत पाठ्यसामग्री में विविधता एवं रोचकता बढ़ाने के लिए कुछ रचनाएँ पढ़ने के लिए दी गई हैं। शिक्षक इन्हें बच्चों को पढ़ने का आनंद लेने दें, आवश्यकतानुसार सहयोग करें,

www.rajteachers.com

परंतु उन पर प्रश्न नहीं पूछे।

सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की प्रक्रिया को अपनाते हुए शिक्षक एक मार्गदर्शक की भूमिका का निर्वाह करें और बालकों को स्वयं करके सीखने के अवसर अधिक से अधिक प्रदान करें।

शिक्षक/शिक्षिका से अपेक्षा है कि बच्चों में भाषा दक्षता के विकास के लिए पुस्तक के अतिरिक्त स्वयं के ज्ञान एवं अनुभव का यथेष्ट उपयोग करते हुए कार्य करेंगे।

उनसे यह भी अपेक्षा है कि वे अध्यापन के दौरान अपने और बालकों के परिवेश की अनदेखी न करें। परिवेश से जोड़ने के लिए चाट्र्स, चित्र और संबद्ध शिक्षण सामग्री का उपयोग करें। बच्चों से अपने निर्देशन में ऐसी सामग्री तैयार भी करवाएँ और स्वयं भी पहल करें। बालगीत, स्थानीय गीत, स्थानीय कला, चित्रांकन, चित्रकथा इत्यादि के प्रयोग को बढ़ावा दें। इन विधाओं का प्रयोग प्रस्तुत पुस्तक में यत्किंचित रूप से किया गया है।

www.rajteachers.com

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	पाठ का नाम	विधा	पृष्ठ सं०
1	हम भारत के भरत	कविता	1
2	मेहनत की कमाई	कहानी	6
3	अपनी वस्तु क्यों देते हैं नारियल की भेंट (केवल पढ़ने के लिए)	कहानी	10
4	त्योहारों का देश	कविता	16
5	अनोखी सूझ	कहानी	20
6	स्वस्थ तन, सुखी जीवन कदरदान ई कदर करै (केवल पढ़ने के लिए)	निबंध लघुकथा	25
7	बालक का स्वप्न	कहानी	32
8	नया समाज बनाएँ	कविता	37
9	सदाचार कामधेनु (केवल पढ़ने के लिए)	निबंध आत्मकथा	41
10	नारी शक्ति की प्रतीक–भगिनी निवेदिता	जीवनी	46
11	नीति के दोहे	दोहे	51
12	मज़ेदार कबड्डी खो–खो (केवल पढ़ने के लिए)	संवाद कविता	54
13	किताबें	कविता	61
14	स्वर्ण नगरी की सैर	संस्मरण	64
15	पन्ना का त्याग	कहानी	69
16	दृढ़ निश्चयी सरदार भारत का नक्शा (केवल पढ़ने के लिए)	संस्मरण कविता	76

www.rajteachers.com

1

हम भारत के भरत

हम भारत के भरत खेलते, शेरों की संतान से।
कोई देश नहीं दुनिया में, बढ़कर हिन्दुस्तान से।।
इस मिट्टी में पैदा होना, बड़े गर्व की बात है।
साहस और वीरता अपने, पुरखों की सौगात है।।

बड़ी–बड़ी ज्वालाओं से कम, नहीं यहाँ चिनगारियाँ।
काँटे पहले, फूल बाद में, देती हैं फुलवारियाँ।।
कभी दहकते, कभी महकते, जीते–मरते शान से।
कोई देश नहीं दुनिया में, बढ़कर हिन्दुस्तान से।।

www.rajteachers.com

कूद समर में आगे आए, जब भी हम ललकारने।
उँगली दाँतों तले दबाई, अचरज से संसार ने।।
सदियों से बनते आए हैं, हम पन्ने इतिहास के।
त्याग और बलिदान हमारे व्रत हैं बारह मास के।।
जब भी निकला हीरा निकला, यहाँ किसी भी खान से।
कोई देश नहीं दुनिया में, बढ़कर हिन्दुस्तान से।।

यह धरती जो माँ है अपनी, हमें जान से प्यारी है।
हर बालक के जिम्मे इसकी, चौकस पहरेदारी है।।
बोलो–मेहनत खूब करेंगे, कठिन परीक्षा आई है।
माँ का दूध पिया जो है, सौगंध उसी की खाई है।।
इसी उम्र में परिचय पा लें, हम श्रम से, बलिदान से।
कोई देश नहीं दुनिया में बढ़कर हिंदुस्तान से।।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

संतान	–	औलाद, संतति
सौगात	–	भेंट, उपहार
पुरखों	–	पूर्वजों
दहकना	–	दुखी होना, तपना, धधकना
समर	–	युद्ध
अचरज	–	आश्चर्य
व्रत	–	संकल्प, नियम, उपवास
चौकस पहरेदारी	–	सावधानी के साथ रखवाली करना

www.rajteachers.com

उच्चारण के लिए

व्रत, पुरखों, ज्वालाओं, श्रम, हिन्दुस्तान, सौगंध, चिनगारियाँ

सोचें और बताएँ

1. भरत किससे खेलते थे ?
2. पुरखों की सौगात क्या है ?
3. हमें जान से प्यारी क्या है ?

लिखें

1. सही उत्तर के शब्द का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें।

(क) सौगात का अर्थ होता है –

(अ)	सोगरा	(ब)	सागर	
(स)	उपहार	(द)	सौगंध	( )

(ख) एक वर्ष में महीनों की संख्या होती है –

(अ)	दस	(ब)	सात	
(स)	बारह	(द)	नौ	( )

2. इस कविता में से वे पंक्तियाँ छाँटकर लिखो, जिनका अर्थ है –

(अ) चिनगारियाँ ज्वालाओं से कम नहीं हैं।

(ब) हमारे काम इतिहास का हिस्सा बनते रहे हैं ।

(स) हम धरती को माँ समान प्यार करते हैं ।

(द) कठिन परीक्षा में मेहनत करने की आवश्यकता है ।

3. हमारे लिए सबसे अधिक गर्व की क्या बात है ?
4. फुलवारियों से हमें क्या–क्या मिलता है ?
5. कविता में हमारे कौनसे व्रतों की बात कही गई है ?
6. बालकों की क्या ज़िम्मेदारी है ?
7. इतिहास के पन्नों में लिखी हुई कौनसी बातें हैं ?

भाषा की बात

- बोलकर अंतर कराएँ

हंस–हँस, चाँद–चंदा, अंगना–आँगन, पूँछ–पूछ, रंग–रँगा

www.rajteachers.com

- नीचे लिखे शब्दों को एकवचन में लिखें

चिंगारियाँ	–	चिंगारी	दवाइयाँ	–	–––––
फुलवारियाँ	–	–––––	मिठाइयाँ	–	–––––
सवारियाँ	–	–––––	तैयारियाँ	–	–––––
क्यारियाँ	–	–––––	सलाइयाँ	–	–––––
बिवाइयाँ	–	–––––	चटाइयाँ	–	–––––

- नीचे दिए गए शब्दों में से पुल्लिंग व स्त्रीलिंग शब्द छाँटकर लिखें।
  मिट्टी, उँगली, हीरा, बालक, परीक्षा, दूध
  जो शब्द स्त्री अथवा पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे "लिंग" कहलाते हैं। लिंग दो प्रकार के होते हैं : (1) स्त्रीलिंग (2) पुल्लिंग

यह भी करें

- हम बालक अपने देश की सेवा के रूप में कौन–कौनसे कार्य कर सकते हैं, चर्चा करें।
- आपके आस–पास देश सेवा करने वालों/देशभक्तों के बारे में जानें व कक्षा में चर्चा करें।
- भारतीय व अंग्रेजी महीनों के नाम लिखें।
- इन महीनों में आने वाले व्रत व त्योहारों के बारे में जानें।
- कविता को मौखिक रूप से याद कर अपनी कक्षा या प्रार्थना सभा में हाव–भाव के साथ सुनाएँ।

मेरा संकलन

अपने आस–पास के किसी ऐतिहासिक/पौराणिक या आधुनिक स्थल अथवा घटना का चित्र या विवरण 'मेरा संकलन' में संकलित करें।

क्र·सं·	ऐतिहासिक	विवरण/चित्र
1	ऐतिहासिक स्थल	
2	इतिहास पुरुष	
3	आविष्कार	
4	घटनाएँ	

www.rajteachers.com

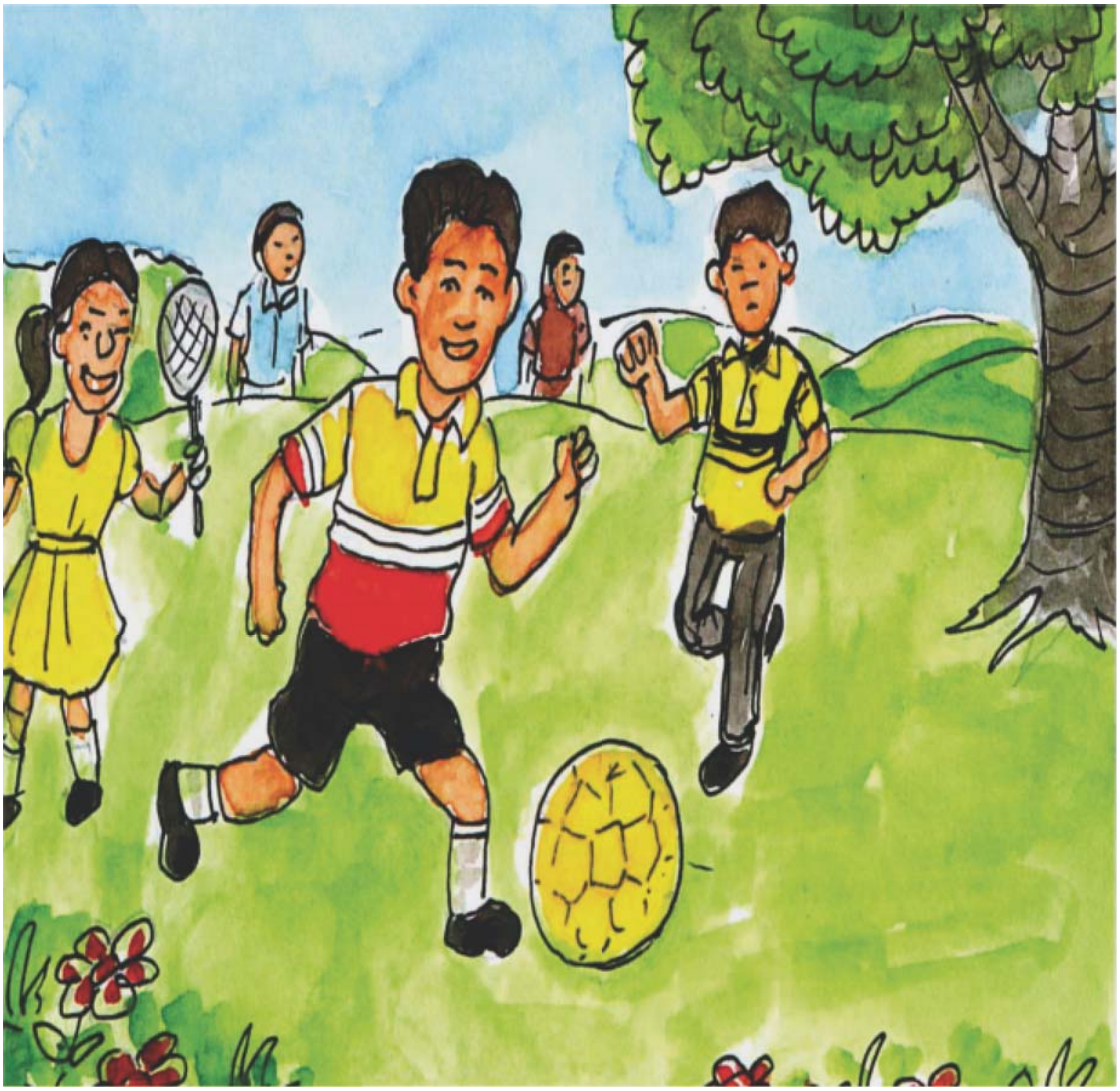

निज राष्ट्र के शरीर के शृंगार के लिए। तुम कल्पना करो, नवीन कल्पना करो।

www.rajteachers.com

2 मेहनत की कमाई

एक अमीर बाप ने अपने आलसी बेटे को बुलाकर कहा, "जा, कुछ कमा ला।" लड़का लापरवाह और निर्लज्ज था। काम करने की उसकी आदत न थी। सीधा माँ के पास गया और रो–धोकर, मिन्नतें कर उसे कुछ देने को राजी कर लिया। माँ से बेटे का दुःख देखा न गया, उसने उसे एक रुपया बक्से से निकाल कर दे दिया।

रात को बाप ने पूछा, "बेटा, तूने क्या कमाया ?" लड़के ने झट से रुपया निकाल कर दिखा दिया। अनुभवी पिता सब समझ गया। उसने कहा, "जा, इसे कुएँ में फेंक आ।" लड़के ने झटपट जाकर रुपया कुएँ में डाल दिया। अगले दिन पिता ने फिर कहा "जा, कुछ कमा ला, नहीं तो, आज भोजन नहीं मिलेगा।"

लड़का अपनी बहिन के पास जाकर रोने लगा। बहिन ने तरस खा कर एक रुपया अपने पास से उसे दे दिया। बाप ने रात्रि में लड़के से पूछा, "आज तू क्या कमा कर लाया ?" लड़के ने जेब में से निकाल कर एक रुपया बाप के सामने रख दिया। बाप बोला, "जा, इसे कुएँ में फेंक आ।" लड़के ने वैसा ही किया।

www.rajteachers.com

अनुभवी पिता ने पत्नी और बेटी को बाहर भेज दिया। पिता ने बेटे से प्रातः उठने पर कहा, "जा, कुछ कमा कर ला, नहीं तो रात को भोजन नहीं मिलेगा।" बेटा दिन भर सुस्त बैठा रहा। उसकी आँखों से आँसू बहते रहे। कोई उसकी सुध लेने वाला न था। विवश होकर संध्या के समय वह उठा और बाजार में मजदूरी खोजने लगा। एक सेठ ने कहा, "मेरा यह संदूक उठा कर घर पहुँचा दे, मैं तुझे चार आने दूँगा।"

अमीर बाप के बेटे ने संदूक उठा कर सेठ के घर पहुँचाया। वह थककर चूर हो गया। उसके पाँव काँप रहे थे और गर्दन तथा पीठ में भयंकर दर्द हो रहा था। रात को बाप ने पूछा, "बेटा, आज तूने क्या कुछ कमाया ?'' लड़के ने चवन्नी निकाल कर दिखाई। बाप बोला, "जा, इसे कुएँ में डाल आ।'' लड़के को क्रोध आ गया। वह बोला, "यह मेरी मेहनत की कमाई है। मेरी गर्दन, कमर और पैर दुखने लगे हैं, आप कहते हैं इसे कुएँ में डाल आ।'' अनुभवी पिता सब कुछ समझ गया। अगले दिन उसने अपना सारा व्यापार लड़के के हवाले कर दिया।

– सुदर्शन

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

लापरवाह	–	असावधान, बेफिक्र
विवश	–	मजबूर
मिन्नत	–	विनती
झटपट	–	तुरत–फुरत
क्रोध	–	गुस्सा
मेहनत	–	परिश्रम

उच्चारण के लिए

व्यापार, गर्दन, क्रोध, दर्द, भयंकर, निर्लज्ज, मिन्नतें, विवश

www.rajteachers.com

सोचें और बताएँ

1. पिता ने बेटे को बुलाकर क्या कहा ?
2. बालक सरलता से एक रुपया कुएँ में क्यों फेंक देता था ?
3. बालक ने अंतिम दिन चवन्नी कुएँ में क्यों नहीं फेंकी ?

लिखें

1. रिक्त स्थान भरें

   (बुखार, दुखने, माँ, रोने, बेटी)

   (क) बेटा .... के पास जाकर .... लगा।

   (ख) पिता ने पत्नी और .... को बाहर भेज दिया।

   (ग) लड़के को .... आ गया।

   (घ) मेरी गर्दन, कमर और पैर .... लगे हैं।
2. बालक अंतिम दिन मजदूरी करने पर विवश क्यों हुआ ?
3. बालक ने चार आने किस प्रकार कमाए ?
4. ''बेटा दिन भर सुस्त बैठा रहा। उसकी आँखों से आँसू बहते रहे।'' बेटा उदास क्यों बैठा था ?
5. ''सेठ की सूझबूझ ने बालक का जीवन बदल दिया।'' कैसे ? समझाइए।
6. अनुभवी पिता ने पत्नी और बेटी को बाहर क्यों भेजा होगा, बताओ।
7. बेटे की गर्दन, कमर और पैर क्यों दुखने लगे थे ?

भाषा की बात

- पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखिए

  दुःख – ....

  जल्दी – ....

  रात्रि – ....

  जीवन – ....

- नीचे दिए गए शब्दों का वाक्य में प्रयोग करें

  स्वस्थ – स्वस्थ रहने के लिए व्यायाम करें।

  (क) पेड़ ....

www.rajteachers.com

(ख) जल ....

(ग) बेटी ....

(घ) आदर ....

यह भी करें–

- यदि माँ और बहिन हमेशा उसे पैसे देती रहती तो क्या होता ?
- पिता ने अपना सारा व्यापार लड़के के हवाले क्यों किया होगा ?
- ''मेहनत की कमाई'' कहानी को कक्षा में नाटक के रूप में प्रदर्शित करें।
- मेहनत करना क्यों जरूरी है ? आप अपने शब्दों में एक लेख तैयार कर प्रार्थना सभा में सुनाएँ।

जो पुरुषार्थ नहीं करते उन्हें धन, मित्र, ऐश्वर्य, सुख, स्वास्थ्य, शांति और संतोष प्राप्त नहीं होते। –वेदव्यास

www.rajteachers.com

3 अपनी वस्तु

एक महात्मा जी कहीं जा रहे थे। मार्ग में उन्होंने एक स्थान पर दो व्यक्तियों को ऊँची आवाज़ में बोलते सुना। दोनों ही हाथों में लट्‌ठ लिए एक–दूसरे के प्राण लेने को उद्‌यत दिखाई देते थे। एक कहता था कि यह भूमि मेरी है और मैं इसका स्वामी हूँ, जबकि दूसरा उस भूमि को अपनी बतला रहा था। उस भूमि पर अपना–अपना स्वामित्व जतलाने के लिए दोनों ही क्रोध से लाल–पीले हो रहे थे। अपने–अपने पक्ष में दलीलें दे रहे थे।

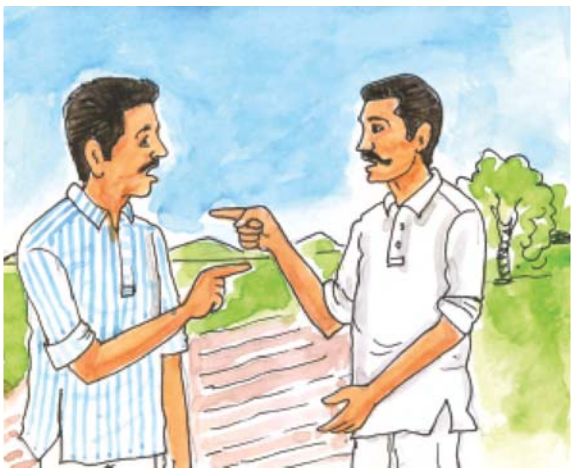

संत महात्मा तो स्वभाव से ही दयालु एवं परोपकारी होते हैं। सदैव सबका भला ही चाहते हैं। उन्होंने मन ही मन विचार किया कि ये दोनों लड़ाई–झगड़ा करके व्यर्थ ही अपने प्राण गँवाने पर तुले हुए हैं। अतएव इन्हें समझा–बुझाकर शांत करने और इनका आपस में समझौता कराने का प्रयास करना चाहिए । यह सोचकर वे उनके निकट गए और उन्हें संबोधित करते हुए बोले – हे भद्र पुरुषों ! तुम लोग कौन हो और आपस में झगड़ा क्यों कर रहे हो ?

महात्मा जी को देखकर उनमें से एक व्यक्ति बोला – महात्मन् ! हम दोनों भाई हैं। हमारे पिता ने मरते समय अपनी सम्पत्ति का जो बँटवारा किया था, उसके अनुसार इस भूमि का मालिक मैं हूँ, फिर भी यह व्यर्थ ही झगड़ा कर रहा है। दूसरा व्यक्ति तत्काल चिल्ला उठा – महाराज यह बिल्कुल झूठ बोल रहा है। यह भूमि इसके भाग में नहीं, बल्कि मेरे भाग में आती है, इसलिए इसका असली मालिक मैं हूँ। यह झूठमूठ ही इसे अपनी बतलाकर और मुझे डरा–धमका कर इसे हड़पना चाहता है।

www.rajteachers.com

महात्माजी ने शांतभाव से फरमाया – तुम दोनों ही इस भूमि को अपना कहते हो और अपने–अपने पक्ष में दलीलें देते हो। ऐसे तो इसका निर्णय कभी नहीं होगा। इसलिए अच्छा यही रहेगा कि जिस भूमि के लिए तुम दोनों मरने–मारने पर उतारू हो, उससे ही यह बात पूछ लो कि उसका असली मालिक तुम दोनों में से कौन है ? वह स्वयं ही इस बात का निर्णय कर देगी।

कुछ पल तक दोनों महात्मा जी के मुख की ओर ताकते रहे, फिर बोले – किन्तु यह कैसे संभव है ? भूमि भी कभी बोलती है!

महात्मा जी ने उत्तर दिया, हाँ वह अवश्य बोलती है, परन्तु उसकी आवाज़ तुम लोग नहीं सुन सकते, हम सुन सकते हैं, किन्तु यह बताओ कि भूमि जो भी निर्णय देगी, क्या वह तुम दोनों को मान्य होगा ?

दोनों भाई इस बात पर राज़ी हो गए। तब महात्मा जी बोले – मुझे बहुत जोरों की भूख लग रही है। पहले मुझे भोजन कराओ।

वे बोले – भूमि का निर्णय हो जाए, फिर आपको डटकर खाना खिलाएँगे।

महात्मा जी ने कहा – भूमि का निर्णय तो हो ही जाएगा, वह कहीं भागे थोड़े ही जा रही है। पहले भोजन हो जाए, ताकि मन–मस्तिष्क कुछ ठिकाने आए। इसलिए तुम दोनों अपने घर से भोजन ले आओ, तब तक हम यहीं बैठे हैं। यह कहकर महात्मा जी एक पेड़ की छाया में बैठ गए।

दोनों भाई घर गए और अपने–अपने घर से भोजन बनवाकर ले आए। महात्मा जी ने उन दोनों को बैठ जाने को कहा। तत्पश्चात् उन्होंने भोजन के तीन भाग किए और दोनों भाइयों को भोजन करने का आदेश देकर स्वयं भी भोजन करने लगे। इस प्रकार ऊपर की सब बातचीत तथा भोजनादि में लगभग दो घंटे लग गए। महात्मा जी की इस समस्त कार्यवाही का उद्देश्य केवल यह था कि दोनों का क्रोध कुछ कम हो जाए, ताकि उन्हें समझाया–बुझाया जा सके और हुआ भी यही। वे दोनों जब भोजन से निवृत्त हुए, तो काफी शांत थे। उन्होंने महात्मा जी के चरणों में विनय की – महाराज ! यह भूमि तो कुछ बोलेगी नहीं, इसलिए आप ही हमारा निर्णय कर दीजिए ।

www.rajteachers.com

महात्मा जी ने कहा– हम इस भूमि से पूछकर इसका निर्णय करते हैं। यह कहकर उन्होंने अपना कान भूमि के साथ लगाया, मानो कुछ सुनने का प्रयत्न कर रहे हों। कुछ देर तक तो वे भूमि के साथ कान लगाए रहे, फिर सीधे बैठ गए और गम्भीर वाणी में बोले – यह भूमि तो कुछ और ही कह रही है।

दोनों भाई बोले – महाराज! भूमि क्या कह रही है ? महात्मा जी ने कहा– यह भूमि कहती है कि ये दोनों व्यर्थ ही मेरे ऊपर अधिकार जमाने के लिए झगड़ा कर रहे हैं, क्योंकि मैं इन दोनों में से किसी की भी नहीं हूँ ! हाँ ! ये दोनों अवश्य मेरे हैं। मैंने इनकी कई पीढ़ियों को पाला है और जाते हुए भी देखा है।

महात्मा जी की बात सुनकर दोनों भाई बड़े लज्जित हुए और महात्मा जी के चरणों में गिर पड़े। महात्मा जी ने लोहा गर्म देखकर चोट की और उन्हें समझाते हुए कहा – तनिक विचार करो कि जिस भूमि के लिए तुम लोग आपस में झगड़ा कर रहे हो, क्या वह आज तक किसी की बनी है, जो तुम लोगों की बन जाएगी। मनुष्य मेरी–मेरी कहकर व्यर्थ यत्न करता है। यह नहीं सोचता कि इनमें से कुछ भी मनुष्य का अपना नहीं है। बड़े–बड़े छत्रपति राजा भी इन्हें अपना–अपना कहकर चले गए, परन्तु साथ क्या ले गए ? कुछ भी नहीं। वे जैसे खाली हाथ संसार में आए थे, वैसे ही खाली हाथ इस संसार से चले गए।

तुम लोग भूमि के इस छोटे से टुकड़े के लिए झगड़ा करके अपने अनमोल जीवन को नष्ट करने पर क्यों तुले हुए हो ? यह भूमि न तुम्हारी है और न ही तुम्हारी बनेगी। भूमि ही क्या संसार के जितने भी पदार्थ हैं, धन–सम्पत्ति है, मकान आदि हैं इनमें से कुछ भी तुम्हारा नहीं है। तुम्हारी अपनी वस्तु तो केवल भजन–भक्ति और तुम्हारे अच्छे कर्म है ! जो लोक–परलोक के संगी–साथी हैं, शेष सब कुछ तो यहीं रह जाता है। अतएव आपस में लड़ने–झगड़ने और मनुष्य–जन्म के मूल्यवान् समय को व्यर्थ नष्ट करने की अपेक्षा जीवन को अच्छे कर्मों और नाम–सुमिरण में लगाओ, ताकि तुम्हारा लोक–परलोक सँवर जाए।

www.rajteachers.com

दोनों ने महात्मा जी के चरणों में गिर कर अपनी भूल के लिए क्षमा माँगी। उस दिन से सबके साथ प्रेम का व्यवहार करते हुए अपने समय को भजन–भक्ति में लगाते हुए अपना जन्म सफल करने लगे।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

उद्यत	–	तैयार
स्वामित्व	–	अधिकार
संपत्ति	–	धन, दौलत
हड़पना	–	गायब कर जाना, अनुचित ढंग से ले लेना
मूल्यवान	–	कीमती
संसार	–	दुनिया
तनिक	–	थोड़ा

उच्चारण के लिए

तत्काल, बिल्कुल, उद्यत, दलीलें, तत्पश्चात्, बँटवारा

सोचें और बताएँ

(1) लड़ाई झगड़ा कौन कर रहे थे ?

(2) दोनों भाई किसके लिए झगड़ा कर रहे थे ?

(3) दोनों भाइयों को किसने समझाया ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(अ) दोनों भाई क्या कर रहे थे –

(अ) हँसी–मजाक (ब) लड़ाई–झगड़ा

(स) बातचीत (द) खाना खा रहे थे ( )

(ब) महात्मा जी के लिए दोनों भाई क्या लाए ?

(अ) सोना (ब) फल

(स) भोजन (द) कपड़ा ( )

www.rajteachers.com

2. महात्मा जी ने झगड़ा रोकने के लिए दोनों भाइयों को क्या राय दी ?
3. भोजन बनवाकर मंगवाने के पीछे महात्मा जी का क्या उद्देश्य था ?
4. महात्मा जी के अनुसार धरती ने क्या कहा ?
5. दोनों भाई लज्जित क्यों हुए ?
6. महात्मा जी ने दोनों भाइयों को क्या समझाया ?

भाषा की बात

पाठ में उद्धृत मुहावरा – **''लाल पीला होना''** का अर्थ **''अत्यधिक क्रोधित होना''** है। वाक्य प्रयोग ''दोनों भाई धरती के स्वामित्व को लेकर लाल पीले हो रहे थे। इसी प्रकार आप भी नीचे लिखे मुहावरों का वाक्यों में प्रयोग करें –

(1) नौ दो ग्यारह होना (2) पसीना–पसीना होना

यह भी करें–

- किसने क्या–क्या कहा ?

  भाई ने भाई से ....

  महात्मा ने भाइयों से ....

  भूमि ने महात्मा से...

- आप भी इसी प्रकार के प्रेरक प्रसंगों का संकलन कर अपने विद्यालय की बालसभा व प्रार्थना सभा में सुनाएँ ।

संतोष का वृक्ष कड़वा है लेकिन इस पर लगने वाला फल मीठा होता है। –स्वामी शिवानंद

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

क्यों देते हैं नारियल की भेंट ?

प्रकृति ने न जाने कितनी तरह के पेड़–पौधे, फल–फूल, वनस्पतियाँ आदि हमारे लिए दिए हैं। अलग रंग, अलग स्वाद, अलग आकार और अलग स्वभाव के ये फल–फूल प्रकृति के अनोखे उपहार हैं ।

इनमें नारियल कुछ विशेष है। इसमें कुछ ऐसे गुण हैं जो इसे विशेष बनाते हैं। नारियल का ऊपरी भाग रूखा–सूखा, खुरदरा एवं अरुचिकर होता है। उतना ही उसका भीतरी भाग नरम, सरल, रुचिकर व हितकारी होता है। एक सच्चे इंसान का व्यक्तित्व ऐसा ही होता है। हर मानव का स्वभाव भी ऐसा ही होना चाहिए।

संघर्ष की राह चलता हुआ मनुष्य ऊपर से भले ही कठोर हो, सुंदर न लगे लेकिन भीतर से संवेदनशील बना रहे। नारियल की भेंट विभिन्न अवसरों पर दी जाती है, यही इसका रहस्य है।

www.rajteachers.com

4 त्योहारों का देश

हुलस रहा माटी का कण–कण, उमड़ रही रस धार है।
त्योहारों का देश हमारा, हमको इससे प्यार है।।

मन–भावन सावन आते ही,
हरियाली छा जाती है।
राखी के दिन बहिन खुशी से,
फूली नहीं समाती है।।
घर बाहर झूले ही झूले
गाते राग मल्हार हैं।
त्योहारों का देश हमारा,
हमको इससे प्यार है।।

आजादी के दिवस तिरंगा,
घर–घर पर लहराता है।
वीर शहीदों की गाथाएँ
हमको याद दिलाता है
मन भावों से भर जाता है
माँ की जय जयकार है।
त्योहारों का देश हमारा,
हमको इससे प्यार है।

आता है हर वर्ष दशहरा,
होते खेल तमाशे हैं।
दीवाली पर दीप–दान,
फुलझड़ियाँ खील बताशे हैं।।
धूम–धड़ाके और पटाखों,
की कैसी भरमार है !
त्योहारों का देश हमारा,
हमको इससे प्यार है।।

www.rajteachers.com

भाईचारे का संदेशा,
ले ईद–मुबारक आती है।
मीठी खीर, सिवैयाँ,
सबके मन को भाती हैं।

खेल–खिलौने पाते बच्चे,
क्रिसमस के उपहार हैं।
त्योहारों का देश हमारा,
हमको इससे प्यार है।।

लोकतंत्र की झाँकी ले,
छब्बीस जनवरी आती है।
बासंती फूलों की खुशबू
झोली में भर जाती है।।
होली में डफ ढोल, मंजीरे,
रंगों की बौछार है।
त्योहारों का देश हमारा,
हमको इससे प्यार है।।

www.rajteachers.com

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

हुलसना	–	प्रसन्न होना
गाथा	–	कहानी
खुशबू	–	सुगंध
मल्हार	–	वर्षा ऋतु में गाया जाने वाला एक राग
रस–धार	–	रस की धारा

उच्चारण के लिए

लोकतंत्र, बासंती, मल्हार, त्योहार, तमाशे, मुबारक, क्रिसमस

सोचें और बताएँ

1. त्योहारों का देश किसे कहते हैं ?
2. आजादी के दिन तिरंगा किस बात की याद दिलाता है ?
3. गणतंत्र दिवस कब मनाया जाता है ?

लिखें

1. रिक्त स्थान की पूर्ति करें–

त्योहारों का देश हमारा...

....फूली नहीं समाती है।

दीवाली पर दीप–दान ....

....रंगों की बौछार है।

2. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें–

(क) पंद्रह अगस्त है–

(अ) महिला दिवस (ब) शिक्षक दिवस

(स) आजादी का दिवस (द) बाल दिवस ( )

(ख) लोकतंत्र की झाँकी लेकर आती है–

(अ) होली (ब) छब्बीस जनवरी

(स) दीवाली (द) ईद ( )

3. राखी का त्योहार कैसे मनाया जाता है ?

4. क्रिसमस पर क्या उपहार मिलते हैं ?

www.rajteachers.com

5. हमारे देश को त्योहारों का देश क्यों कहते हैं ?
6. वीर शहीदों की गाथाएँ सुनकर मन में क्या भाव उठते हैं ?
7. भाईचारे का संदेश कौनसा त्योहार देता है ?

भाषा की बात

- एक शब्द में लिखें

1. बहिनों का त्योहार है– ....
2. लोकतंत्र का दिवस है– ....
3. एक राग जिसे वर्षा ऋतु में गाया जाता है– ....
4. वह व्यक्ति जो मातृभूमि के लिए बलिदान होता है– ....

यह भी करें

- राजस्थान में मनाए जाने वाले 'त्योहारों व पर्वों' की सारणी को उत्तर पुस्तिका में निम्न प्रारूप में सूची बद्ध करें–

त्योहार /पर्व का नाम	**कब मनाया जाता है ?**	**कैसे मनाया जाता है?**

- त्योहारों से संबंधित गीतों को उत्तरपुस्तिका में निम्न प्रकार से सूचीबद्ध करें–

क्र. सं.	त्योहार, पर्व का नाम	गाए जाने वाले गीत की एक पंक्ति

- किसी एक त्योहार पर अपने शब्दों में दस वाक्य लिखकर कक्षा में सुनाएँ।

> आकाश में उड़ने वाले पंछी को भी अपने घर की याद आती है।
> –प्रेमचंद

www.rajteachers.com

5

अनोखी सूझ

बात पुराने जमाने की है। उन दिनों देवताओं और दानवों में युद्ध होता रहता था। दोनों पक्ष मिलकर एक बार प्रजापति के पास गए। वहाँ जाकर बोले – ''मान्यवर ! हम दोनों ही आपकी संतान हैं। बताइए कि हम दोनों में बुद्धि में कौन बड़ा है ?''

उनकी बात सुनकर प्रजापति मुस्कुराए। मन में सोचने लगे– ''किसे बड़ा बताऊँ !

देवताओं को या दानवों को ? देवताओं को बड़ा बताता हूँ तो दानव नाराज होते हैं। दानवों को बड़ा बताता हूँ तो देवता नाराज होते हैं। हो सकता है तब दोनों आपस में लड़ने लगें।''

बड़ा टेढ़ा प्रश्न था। बड़ा बताएँ तो किसे बताएँ। कुछ सोच कर वे बोले– ''इसका उत्तर कल दूँगा। आप दोनों ही कल मेरे यहाँ भोजन पर आमंत्रित हो। भोजन के बाद बताऊँगा कि कौन बुद्धि में श्रेष्ठ है।''

दूसरे दिन दोनों पक्ष भोजन के लिए पहुँचे। दोनों को अलग–अलग कमरों में बिठाया गया। वहाँ मिष्ठान्न से भरे थाल भिजवा दिए गए। प्रजापति दानवों के कमरे में गए। उन्होंने कहा– ''आप लोग भोजन करें। शर्त यह है कि कोहनी को बिना मोड़े भोजन करना है।''

यही बात उन्होंने देवताओं से भी कही।

www.rajteachers.com

प्रजापति की बात सुन दोनों परेशान हुए। वे एक दूसरे का मुँह ताकने लगे।

समस्या थी खाएँ तो खाएँ कैसे ? कोहनी नहीं मुड़नी चाहिए। भोजन भी नहीं बचना चाहिए। प्रजापति की आज्ञा का भी पालन होना चाहिए।

देवताओं ने एक उपाय सोचा। कमरे के किवाड़ बंद किए। आमने–सामने बैठ गए। लड्डू उठा–उठा कर एक दूसरे के मुँह में देने लगे। कुछ देर में थाल साफ हो गया। सारे लड्डू समाप्त हो गए। न हो–हल्ला न शोरगुल। देवताओं ने शांतिपूर्वक भोजन किया।

दानव अपने कमरे में परेशान थे। सोचने लगे– ''बेकार ही यहाँ आए। नहीं आते तो यह परीक्षा तो नहीं देनी पड़ती। आ ही गए हैं तो परीक्षा देनी ही पड़ेगी।''

दानवों ने भी किवाड़ बंद किए। लड्डुओं के थाल पर टूट पड़े। लड्डू लेकर ऊपर उछालने लगे। लड्डू जब नीचे आते तो मुँह खोल लपकते। लड्डू जमीन पर गिरते और चूर–चूर हो जाते। कमरे से हो–हो–ही–ही की आवाजें आती रही। चीखते–चिल्लाते और लड़ते–झगड़ते रहे।

www.rajteachers.com

सारी स्थिति स्पष्ट थी। प्रजापति ने कहा– ''देवता ही श्रेष्ठ हैं। जानते हो क्यों ? इसलिए कि इन्होंने सहकार की भावना से काम किया है। खुद भी खाओ और दूसरों को भी खिलाओ। जिओ और जीने दो। यह थी इनकी विशेषता। इन्होंने बुद्धि से काम लिया। सूझ–बूझ दिखाई। ये आमने–सामने बैठ गए। एक दूसरे के मुँह में लड्डू देते रहे। थोड़ी देर में थाल साफ कर दिए।

दूसरी तरफ दानवों ने शर्त का पालन किया। लड्डू उछालते रहे। उन्हें पाने के लिए लपकते रहे। न खुद खाए न दूसरों को खाने दिए। लड्डू तो बिगड़े ही, पेट भी न भरा।

शिक्षण संकेत :–

जिसके पास बुद्धि है उसी के पास बल है। इसके लिए संस्कृत में एक सूक्ति है ''बुद्धिर्यस्य बलं तस्य।'' इस पौराणिक कहानी में देवताओं के परीक्षा में सफल होने का यही आधार बताया गया है। शिक्षण के समय अन्य प्रसंग देकर भी बुद्धि की महत्ता और सूझबूझ को स्पष्ट किया जा सकता है। विशेषकर विपत्ति के समय बुद्धि ही मनुष्य का साथ देती है। जीवनगत इस सत्य को अवश्य उभारें।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मान्यवर – सम्मान सूचक सम्बोधन
ब्रह्मा – प्रजापति, सृष्टि रचने वाला
शांतिपूर्वक – शांति के साथ
मिष्ठान्न – मिठाई, मीठा अन्न
मुँह ताकना – देखते रहना
टूट पड़ना – झपटना

उच्चारण के लिए

मान्यवर, प्रजापति, आमंत्रित, मिष्ठान्न

सोचें और बताएँ

1. प्रजापति किसे कहा गया है ?
2. पहले दिन प्रजापति ने देवता और दानवों को क्या उत्तर दिया ?
3. देवताओं और दानवों ने प्रजापति से क्या प्रश्न किया ?

www.rajteachers.com

लिखें

1. दिए गए शब्दों से रिक्त स्थानों की पूर्ति करें
   (श्रेष्ठ, दूसरों, खुद, लपकते, परीक्षा)
   (क) भोजन के बाद बताऊँगा कि कौन बुद्धि में .... है ?
   (ख) आ ही गए हैं तो .... देनी ही पड़ेगी।
   (ग) वे उन्हें पाने के लिए .... रहे ।
   (घ) .... भी खाओ और .... को भी खाने दो।
2. नीचे दिए गए वाक्य सही होने पर (✓) व गलत होने पर (✗) का निशान लगाएँ
   (क) देवताओं और दानवों में युद्ध होता रहता था। ( )
   (ख) देवता और दानव दोनों को एक ही कमरे में बैठाया गया। ( )
   (ग) प्रजापति ने बिना शर्त भोजन करवाया। ( )
   (घ) देवता परीक्षा में श्रेष्ठ निकले। ( )
3. प्रजापति ने भोजन करने के लिए किनको आमंत्रित किया ?
4. प्रजापति ने भोजन करने की क्या शर्त रखी ?
5. देवताओं ने अपनी सूझ–बूझ कैसे दिखाई ?
6. शोरगुल कौन कर रहे थे और क्यों ?
7. प्रजापति ने किसको श्रेष्ठ बताया और क्यों ?

भाषा की बात

- 'टूट पड़ना' – एक मुहावरा है, जिसका अर्थ है झपटना। इसी प्रकार नीचे लिखे मुहावरों का अर्थ बताएँ
  1. चूर–चूर होना।
  2. सूझ–बूझ दिखाना।
- प्रजापति दानवों के कमरे में गए।
  इस वाक्य में 'के' दानवों और कमरे का संबंध बता रहा है।
  का, के, की ये तीनों संबंध बताने के काम आते हैं।
- अब तुम पाठ में से वे पाँच वाक्य छाँटो, जिनमें का/के/की का प्रयोग हुआ हो ।

जहाँ एक संज्ञा शब्द का दूसरे शब्द के साथ संबंध बताया जाए उसे 'संबंध कारक' कहते हैं । इस संबंध को बताने वाले का/के/की को संबंध कारक चिह्न कहते हैं।

www.rajteachers.com

यह भी करें–

- इस पाठ की कहानी का मंचन अपनी कक्षा में करें।
- अपनी कक्षा को दो भागों में आमने–सामने बैठाएँ। चर्चा का विषय तय करें और एक समूह दूसरे से तय विषय पर कोई सवाल करें। उसके सामने वाला बच्चा उत्तर दे। यह क्रम बारी–बारी से पूरा करें। बाद में उत्तर देने वाला समूह प्रश्न करे और दूसरा समूह उत्तर दे। बीच–बीच में विषय बदला जा सकता है।

मेरा संकलन

सूझ–बूझ को स्पष्ट करने वाली कोई अन्य कहानी 'मेरा संकलन' में लिखें।

ज्ञानीजन विवेक से सीखते हैं, साधारण मनुष्य अनुभव से, अज्ञानी पुरुष आवश्यकता से और पशु स्वभाव से। –कौटिल्य

www.rajteachers.com

6 स्वस्थ तन, सुखी जीवन

शाम हो गई। दादाजी चौक में मुड्डे पर बैठकर बच्चों को पुकार रहे थे। मगर बच्चे तो मोबाइल गेम पर डटे हुए थे। आखिर सुषमा ने उनके बीच जाकर कहा, "अरे ! क्या मिल जाएगा तुम्हें इन खेलों से ? दादाजी के साथ बैठो तो दो बात काम की सीखोगे। तोषी, बिट्टू, हनी तीनों चलो बाहर !"

"हाँ मम्मी ! आप सही कह रही हैं। दादाजी की हर बात पते की है। कल भी तो कहानियों में कितनी अच्छी बातें समझाई थीं।" तोषी ने कहा और फिर उसके साथ तीनों बच्चे दादाजी के पास आकर बैठ गए। वे बैठे तो किरायेदार के दोनों बच्चे खुशी और अनु भी पास आकर बैठ गए। उनके हाथ साफ नहीं थे। पाँव भी गंदे थे। उनको देखते ही दादाजी की भौंहें ऐनक के फेरे से भी बाहर तक तन गई।

वे कहने लगे, "बुरी बात है गंदगी ! अच्छी बात है सफाई। गंदगी बीमारी लाती है, सफाई हमें बचाती है।"

बच्चों ने खुशी और अनु की ओर देखा। तब तक वे हाथ–पाँव धोकर आ बैठे। दादाजी ने शाबाशी दी और बोले, "साफ–सफाई रखो भाई।" अच्छी तबीयत हो, उसके लिए साफ–स्वच्छ रहना और वातावरण को भी साफ–सुथरा रखना जरूरी है। तंदुरुस्त हों तो हमें सब कुछ अच्छा लगता है। हँसने–हँसाने का मन करता है। रात को नींद अच्छी आती है और सुबह तरोताज़ा उठते हैं। हर काम फटाफट करते हैं। आलस्य हमारे पास तक नहीं फटकता।

"हाँ दादाजी! खाना भी अच्छा लगता है।" बिट्टू बोला।

"बिल्कुल सही कहा तुमने। भोजन पचता भी ठीक है और भूख भी अच्छी लगती है।

www.rajteachers.com

मगर यदि हमारी तबीयत ठीक न हो तो कुछ भी अच्छा नहीं लगता। न भूख लगती है न नींद आती है। चिड़चिड़े हो जाते हैं। उदासी घेर लेती है और उबासियाँ आती रहती हैं।"

दादाजी ने आगे कहा, "काम की बात यह है कि हम सबसे पहले अपने शरीर को साफ रखें। तुम्हें मालूम है न ! काम करने और दौड़–भाग करने से हमारे शरीर से पसीना निकलता है। पसीने में धूल के कण मिल जाने से मैल की परत जम जाती है। इससे त्वचा के छिद्र बंद हो जाते हैं।"

"उफ!दादाजी, छी–छी। पसीना तो बदबू मारता है न।" हनी बोल पड़ा।

"हाँ बेटे! इसीलिए हम रोजाना नहाएँ। हमें शरीर पर मैल नहीं जमने देना चाहिए। मैल जम जाए तो मोटे कपड़े से रगड़–रगड़ कर उतारना चाहिए और हाँ, सुबह उठने और शाम को सोने से पहले दाँत साफ करना चाहिए, हफ्ते में दो बार नाखून काटें। शौच के बाद साबुन से हाथ जरूर धोएँ।"

"जी दादाजी!" सभी बच्चे एक साथ बोले। दादाजी आगे बोले, "शरीर के साथ–साथ हमें कपड़े भी साफ पहनने चाहिए। गंदे कपड़ों में कीटाणु हो सकते हैं। जहाँ तक हो, हमें कभी भी बिना धुले कपड़े नहीं पहनने चाहिए।"

"हमें घर भी साफ–सुथरा रखना चाहिए।" सुषमा आकर बोली, तो दादाजी ने कहा, "हाँ बहू। इस बात पर तो तुमने अच्छी तरह अमल कर रखा है। सुबह उठते ही झाड़ू लगाकर तुम फर्श और दीवारों पर धूल नहीं जमने देती हो। बच्चों को पता होना चाहिए कि गंदगी से कीटाणुओं के फैलने का डर रहता है। सफाई नहीं होने पर नालियों में कीचड़ जमा हो जाता है। वहाँ भी कीटाणु पल सकते हैं।"

दादाजी ने यह भी कहा, "खुली धूप और ताजी शुद्ध हवा स्वास्थ्य के लिए जरूरी है। धूप से हमें विटामिन 'डी' मिलता है

www.rajteachers.com

जो शरीर के लिए बहुत जरूरी है। हम जो पानी पीते हैं, वह शुद्ध हो । पानी को छान कर पीना चाहिए। पानी ऐसे कुएँ का हो जिसकी रोजाना सफाई होती हो।"

तोषी बोली, "हमें गुरुजी ने भी बताया था कि गंदा पानी पीने से हम बीमार पड़ जाते हैं।"

"सही बताया तुम्हें। हमें बहुत सी बीमारियाँ तो अशुद्ध पानी पीने से ही होती हैं। हमें शुद्ध पानी ही पीना चाहिए।"

"बातें हो गई हों तो खाना लगा दूँ।" सुषमा की आवाज़ आई।

"अरे याद आया बच्चो ! हमारा भोजन भी शुद्ध, ताजा और पौष्टिक होना चाहिए। खुली हुई चीजें, जिन पर मक्खियाँ भिनभिनाती हों, कभी नहीं खानी चाहिए। फल और सब्जियों का उपयोग धोकर ही करने में समझदारी है। खुली चीजें और पहले से काटकर रखे फलों को खाने से बीमार पड़ने का भय रहता है। विद्यालय में मिलने वाली डी वर्मिंग की गोलियों से भी पेट की बीमारियाँ दूर रहती है। आयरन की गोलियों से स्वास्थ्य तरोताजा रहता है।" दादाजी कहते गए।

खाना लगा तब तक उन्होंने यह भी बताया कि अच्छी तबीयत के लिए हमें कसरत भी करनी चाहिए। रोजाना खेल में रुचि लें मगर खेल वे हों, जिनमें शारीरिक व्यायाम हो जाए। खो–खो, कबड्डी, फुटबॉल, वॉलीबॉल, टेबल टेनिस, तैराकी आदि से हम भले–चंगे हो सकते हैं।

तभी दादीजी भी टहलते–टहलते आ गई और बातें सुनकर कहने लगी, "कुछ मेरी भी सुन लो। खुश रहना अच्छे स्वास्थ्य की निशानी है। न चिढ़ें न गुस्सा करें और न ही चिंता करें। धीरज और प्रसन्नता दिखाएँ। कहा है न – "हँसो और हँसाओ, अच्छा स्वास्थ्य पाओ।"

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

शाबाश	–	एक प्रशंसा सूचक शब्द
स्वच्छ	–	साफ / पवित्र
तंदुरुस्त	–	स्वस्थ
तरोताजा	–	ताजगी भरा
कीटाणु	–	रोगाणु
विटामिन	–	पौष्टिक तत्व

www.rajteachers.com

उच्चारण के लिए

सुषमा, तोषी, मम्मी, पाँव, गंदगी, स्वच्छ, तंदुरुस्त, आलस्य, कीटाणुओं, शुद्ध, स्वास्थ्य

सोचें और बताएँ

1. बच्चे किस पर गेम खेल रहे थे ?
2. सुषमा ने उनके बीच जाकर क्या कहा ?
3. स्वस्थ तन से सुखी जीवन कैसे होता है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

   (सफाई, अच्छा स्वास्थ्य, गंदगी)

   (अ) बुरी बात है .... । अच्छी बात है .... ।

   (ब) हँसो और हँसाओ................. पाओ।

2. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

   (अ) दादाजी ने बच्चों को शाबाशी दी–

   (क) जब बच्चे नहा–धोकर आ गए

   (ख) खाना खाकर आ गए

   (ग) जब बच्चे खेलकर आ गए

   (घ) जब बच्चे हाथ–पाँव धोकर आ गए ( )

   (ब) ''तंदुरुस्त हो तो हमें सब कुछ अच्छा लगता है।'' यह बात कही–

   (क) दादीजी ने (ख) माताजी ने

   (ग) बच्चों ने (घ) दादाजी ने ( )

3. शाम के समय दादाजी कहाँ बैठे थे ?
4. 'अरे ! क्या मिल जाएगा तुम्हें इन खेलों में', यह बात किसने किसको कही ?
5. किरायेदार के बच्चों का क्या नाम था ?
6. दादाजी की भौंहें ऐनक के घेरे से भी बाहर तक क्यों और कब आई ?
7. उन पंक्तियों को लिखिए, जिनमें साफ–सफाई की बात आई हो ?
8. आपके विद्यालय में स्वास्थ्य संबंधी कौन–कौन सी गोलियाँ दी जाती है, लिखों।

भाषा की बात

www.rajteachers.com

- धूप से <u>हमें</u> विटामिन डी मिलता है। रेखांकित शब्द सर्वनाम शब्द है, इसी प्रकार पाठ में आए सर्वनाम शब्द छाँटें।
- हमें <u>शुद्ध</u> पानी ही पीना चाहिए। रेखांकित शब्द 'शुद्ध' विशेषण है, विशेषण शब्दों वाले पाँच वाक्यों को पाठ में से छाँटकर लिखें।

यह भी करें

- स्वस्थ रहने के तरीके क्या–क्या हो सकते हैं ? उनके न अपनाने से क्या हानि हो सकती है। सारणीबद्ध करें–
- साफ–सफाई से क्या–क्या लाभ है, अपने शब्दों में लिखकर अपनी कक्षा में सुनाएँ

स्वस्थ रहने के तरीके	न अपनाने पर हानि

www.rajteachers.com

• नीचे दिए गए चित्र में बालक व बालिका क्या कर रहे हैं ? अपने विचार अभ्यास पुस्तिका में लिखें।

स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क निवास करता है।

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

कदरदान ई कदर करै

एक बार एक चित्रकार एक चित्र बनाकर राजा के पास ले गया। राजा ने उसे पचास रुपये दिए। तब चित्रकार ने पूछा कि महाराज, आपने चित्र की कीमत दी है या मुझे गरीब जानकर रुपये दे दिए हैं। तब राजा ने कहा कि चित्र में क्या धरा है ? हमने तो तुमको गरीब जानकर ही रुपये दिए हैं। तब चित्रकार अपना चित्र लेकर वहाँ से चला आया। रास्ते में उसे एक गरीब आदमी मिला।

उसने चित्र देखा तो वाह!—वाह! कर उठा। उसने कहा कि इस चित्र की कीमत दस हजार रुपये भी कम है। तब चित्रकार ने पूछा कि भला ऐसी इसमें क्या बात है ? तब वह बोला कि चित्र में एक गूजरी सिर पर पानी का घड़ा लिए चली जा रही है, उसके पैर में काँटा लग गया है, सो उसके दर्द से उसके नाक में बल पड़ गया है। वह दाँतों से ओंठों को दबाए चीत्कार करती—सी चली जा रही है। पीड़ा के कारण इसके रोम—रोम में बल पड़ा हुआ है। बस इसी बात पर मैं रीझ गया हूँ।

चित्रकार उसकी कद्रदानी पर बहुत खुश हुआ। उस आदमी के पास सिर्फ एक रुपया ही था, चित्रकार ने चित्र की कीमत स्वरूप ले लिया और संतुष्ट होकर चला गया।

www.rajteachers.com

7 बालक का स्वप्न

किसी सेठ के यहाँ एक लड़का नौकरी करता था। एक रात्रि स्वप्न में वह चिल्ला उठा, "अहो, मेरा भाग्य" सेठ ने यह सुन बालक को जगाकर पूछा, "अरे, क्यों चिल्ला रहा था ?" वह लड़का कहने लगा, "यों ही, कोई खास बात नहीं।"

अगले दिन सेठ ने उस लड़के से स्वप्न की बात पुनः पूछी, पर वह टाल गया। उस दिन से बालक छिपकर पढ़ने लगा। एक दिन सेठ ने कहा, "सुन रे लड़के, आज या तो तू स्वप्न की बात बता दे या मेरे यहाँ काम करना बंद कर दे !" लड़का चतुर था, होनहार था। उसने नौकरी छोड़ दी।

उसने पढ़ाई चालू रखी। इसी बीच उसे गाँव के जमींदार के यहाँ नौकरी मिल गई। एक दिन सेठ जमींदार के यहाँ कपड़े लेकर आया। उसने लड़के को वहाँ काम करते देखा। सेठ ने जमींदार को लड़के के स्वप्न और निकाले जाने की बात बता दी। इस पर जमींदार ने उसे बुलाकर कहा, "लड़के, या तो तू मुझे अपने स्वप्न की बात बता दे, अन्यथा आज ही मैं तुझे अपने यहाँ से हटा दूँगा" परन्तु वह लड़का धुन का पक्का और दृढ़ निश्चयी था।

उसने कुछ न बताया और नौकरी से अलग हो गया। उसने अपना अध्ययन चालू रखा। वह किसी प्रकार अपनी सूझ–बूझ से राजा के यहाँ साधारण नौकर हो गया और फिर धीरे–धीरे उन्नति करते–करते एक दिन राजा का मंत्री बन गया।

अकस्मात् एक दिन वही जमींदार राजा के यहाँ आया। उसने उसे पहचान लिया और राजा से सारी बात कह सुनाई। राजा ने मंत्री को बुलाकर पूछा,

www.rajteachers.com

"मंत्रीजी, आपने बहुत दिन पहले सेठ के यहाँ क्या स्वप्न देखा था ? आप या तो वह स्वप्न हमें बताइए या फिर दंड के लिए तैयार हो जाइए !"

मंत्री ने स्वप्न बताने से इंकार कर दिया। राजा ने नाराज होकर मंत्री को कैदखाने में डाल दिया। कुछ दिन बाद पड़ोसी राजा ने इस राजा पर चढ़ाई करने की सोची। उसने सीमा पर अपनी सेना भी जमा कर ली। उसने इस राजा तथा मंत्रियों की चतुराई जानने के लिए दो घोड़ियाँ भेजीं और पुछवाया कि इनमें माँ कौनसी है और बेटी कौनसी है। सभी ने अपनी–अपनी बुद्धि लगाई पर समस्या को कोई हल न कर सका।

राजा का नौकर, बंदी मंत्री को, नित्य भोजन देने जाता था। उसने सारी बात मंत्री को बताई। राजा की परेशानी सुनकर मंत्री कहने लगा,

"यह कौन कठिन बात है। दोनों को नदी में नहलाने ले जाओ। जो पहले, आगे नदी में घुसे वहीं माँ है और जो पीछे चले वह बेटी है।"

इसके बाद उसी प्रकार के दो तीन प्रश्न राजा ने भेजे। मंत्री ने सबको हल कर दिया। पड़ोसी राजा ने यह सोच कर कि इसे हराना कठिन है, अपनी सेनाएँ हटा ली। उसने संदेशा भिजवाया कि जिस व्यक्ति ने मेरे प्रश्नों को हल किया है, उससे हम अपनी कन्या का विवाह करना चाहते हैं।

इस समाचार से राज्य भर में सनसनी फैल गई। उस बंदी मंत्री की चारों ओर प्रशंसा होने लगी। राजा ने उसे तुरंत मुक्त कर दिया। इसके बाद पड़ोसी राजा ने अपनी कन्या का विवाह उससे कर दिया। राजा ने मंत्री को अपना आधा राज्य भी दे दिया। इसके बाद इस राजा ने भी उसे बहुत–सी चल और अचल संपत्ति भी दी।

कुछ दिन बाद एक दिन प्रातःकाल इस मंत्रीराजा ने दोनों राजाओं, जमींदार तथा सेठ सभी को अपने यहाँ आमंत्रित किया। जब वे सब वहाँ उपस्थित हुए तो उस समय यह मंत्रीराजा पलंग पर महल के विशाल एवं सुसज्जित कक्ष में लेटे थे। उनकी पत्नी उनके पास बैठी थी। इसके अतिरिक्त अन्य कई नौकर भी इनकी सेवा में जुटे थे। चारों व्यक्ति भी उसके आस–पास बैठे थे ।

तब उस मंत्रीराजा ने कहा, "यही दृश्य जो आप लोग इस समय यहाँ देख रहे हैं, मैंने स्वप्न में देखा था, और तभी मैं स्वप्न में चिल्लाया था, "अहो, मेरा ऐसा भाग्य !" मैंने तब यह बात आप लोगों को बता दी होती तो आप में से कोई भी इसे पूरा न होने देता। हो सकता था कि ईर्ष्या, लोभ और अपमान के वशीभूत आप मुझे मौत के घाट भी

www.rajteachers.com

उतरवा देते।"

सच है, अपने मस्तिष्क में जो विचार आएँ, उनकी व्यर्थ चर्चा न करते हुए, उन्हें योजनाबद्ध तरीके से पूर्ण करने में जुट जाना चाहिए। कर्म, कठोरता, लगन और निष्ठा से कोई भी व्यक्ति महान् बन सकता है।

— निरूपमा कश्यप

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

स्वप्न	–	सपना
चतुर	–	चालाक
अकस्मात्	–	अचानक
दंड	–	सज़ा
समस्या	–	उलझन
अचल सम्पत्ति	–	स्थायी सम्पत्ति
विशाल	–	बड़ा
सज्जित	–	सजाया हुआ
अतिरिक्त	–	अलग, भिन्न
दृश्य	–	जो दिख रहा है वह
ईर्ष्या	–	जलन
वशीभूत	–	वश में किया हुआ
योजनाबद्ध	–	योजनानुसार, विधिवत
निष्ठा	–	आस्था, श्रद्धा
कर्म	–	कार्य, काम

उच्चारण के लिए

उम्र, रात्रि, स्वप्न, चिल्ला, भाग्य, अन्यथा, अकस्मात्, दंड, बुद्धि, प्रशंसा, सज्जित, अतिरिक्त, आमंत्रित, विशाल, पत्नी

सोचें और बताएँ

1. राजा के प्रश्नों को किसने हल किया ?

www.rajteachers.com

2. सेठ ने पहली बार स्वप्न की बात बालक से कब पूछी ?
3. राजा ने मंत्री से कितने प्रश्न पूछे ?
4. स्वप्न का बालक पर क्या असर हुआ ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) सेठ ने उस लड़के से स्वप्न की बात पुनः पूछी पर वह टाल गया। उस दिन के बाद से ही–

(क) बालक छिप गया
(ख) बालक भाग गया
(ग) बालक छिपकर पढ़ने लगा
(घ) बालक नौकरी छोड़ कर चला गया ( )

(ब) जमींदार ने बालक को बुलाकर कहा–

(क) नौकरी छोड़ने को
(ख) काम करने को
(ग) बाजार जाने को
(घ) स्वप्न की बात बताने को ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(अध्ययन, अकस्मात्, साधारण नौकर, सूझबूझ)

(क) .... एक दिन वही जमींदार राजा के यहाँ आया ।

(ख) उसने अपना.............................. चालू रखा । वह किसी प्रकार अपनी......................... से राजा के यहाँ पर.......................... हो गया ।

3. लड़के का स्वभाव कैसा था ?
4. जमींदार ने बालक से क्या कहा ?
5. पड़ोसी राजा ने दो घोड़ियों को क्यों भेजा ?
6. राजा ने मंत्रीजी को क्या धमकी दी ?
7. राजा मंत्री से अपनी कन्या का विवाह क्यों करना चाहता था ?
8. मंत्री को अपनी सूझ–बूझ और चतुराई का क्या लाभ हुआ ?
9. मंत्री–राजा ने स्वप्न में क्या दृश्य देखा था ?
10. लड़के ने स्वप्न की बात सबको कब बताई ?

www.rajteachers.com

भाषा की बात

- इस प्रकार के शब्द सोचें और लिखें

1. सूझ–बूझ
2. ....
3. ....
4. ....
5. ....

यह भी करें

- कहानी को संवाद में बदलकर अपनी कक्षा में मंचन कीजिए ।
- यदि ऐसा सपना आपको आया होता, तो आप किसी को बताते या नहीं; नहीं तो क्यों ?

अज्ञान ही मोह और स्वार्थ की जननी है।
–महात्मा गाँधी

www.rajteachers.com

8

नया समाज बनाएँ

आओ, नया समाज बनाएँ।
इस धरती को स्वर्ग बनाएँ।
आओ, नया समाज बनाएँ।।

जाति–पाँति के बंधन तोड़ें
अपनेपन की कड़ियाँ जोड़ें,
इस धरती के हर मानव का
मानवता से नाता जोड़ें।
एक दूसरे के सुख–दुख में
मिलकर बैठें हाथ बटाएँ
आओ, नया समाज बनाएँ ।।

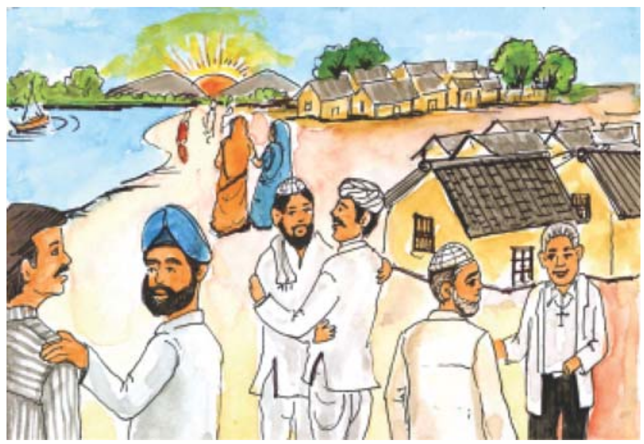

इस माटी का कण–कण चंदन
इसे करें हम शत–शत वंदन।
नई रोशनी की किरणें बन
आज सजा दें हर घर आँगन।

मिल–जुल कर आगे बढ़ने का
सबके मन में भाव जगाएँ ।
आओ, नया समाज बनाएँ ।।
श्रम को जीवन–मंत्र बनाएँ
ऊँच–नीच का भेद मिटाएँ
भारत माता के हम सपूत बन
नव जीवन की अलख जगाएँ।
धरा सभी की, गगन सभी का
यही प्रेम–संदेश सुनाएँ ।
आओ, नया समाज बनाएँ।।

www.rajteachers.com

शिक्षण संकेत :–

प्रस्तुत कविता के आधार पर ऐसे नए समाज के निर्माण का भाव अभीष्ट है, जिसमें "एक सबके लिए सब एक के लिए" जीने के भाव से प्रेरित हो। नए समाज को बनाने की आवश्यकता एवं दिशाएँ भी कविता में अन्तर्निहित हैं। शिक्षण में इन बातों को भी ध्यान में रखें।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

स्वर्ग – एक विश्वास जिसके अनुसार मृत्यु के बाद अच्छे कर्मों के फलस्वरूप मिलने वाला स्थान, जहाँ सब प्रकार के सुख मिलते हैं।

कड़ियाँ जोड़ना – मेल करना

हाथ बटाना – सहायता करना

अलख जगाना – नए विचारों का प्रसार करना

गगन – आकाश

धरा – धरती

उच्चारण के लिए

बंधन, वंदन, चंदन, मंत्र, संदेश, कड़ियाँ, श्रम, आँगन, स्वर्ग बनाएँ, तोडें,

सोचें और बताएँ

निम्नलिखित पंक्तियों को पढ़े और इनके शब्दार्थ/भावार्थ को जानें

(अ) जाति–पाँति के बंधन तोड़ें
अपनेपन की कड़ियाँ जोड़ें।

(ब) मिलजुल कर आगे बढ़ने का
सबके मन में भाव जगाएँ।

(स) धरा सभी की, गगन सभी का
यही प्रेम–संदेश सुनाएँ।

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें

(अ) इस धरती के ....,
.... से .... जोड़ें।

www.rajteachers.com

(ब) .... की किरणें बन,
आज सजा दें .... ।

(स) .... को जीवन मंत्र ....,
ऊँच–नीच का .... ।

2. भारत माँ के सपूत बन कर हम कौन–कौनसे काम करें ?
3. कविता के आधार पर "नया समाज" कैसा होगा ?
4. कौनसा संदेश सुनाने की बात कविता में कही गई है ?
5. हमें किसका भेद मिटाने की आवश्यकता है?
6. "नई रोशनी" से क्या तात्पर्य है ?
7. हमें एक–दूसरे के प्रति कैसा भाव रखना चाहिए ?

भाषा की बात

- कविता में अनुस्वार व अनुनासिक प्रयोग वाले शब्दों को छाँटकर लिखें।

अनुस्वार (ं)	अनुनासिक (ँ)

यह भी करें–

- कविता को मौखिक यादकर अपनी कक्षा में हाव–भाव के साथ सुनाएँ।
- अब तक पढ़ी कविताएँ व कहानियों के नामों को सूचीबद्ध करें।

कविताओं के नाम	कहानियों के नाम	पाठ का क्रम

- विभिन्न कविताओं का संकलन कर अपनी एक गीत डायरी बनाएँ और विद्यालय में आयोजित विभिन्न उत्सवों पर सुनाएँ।

www.rajteachers.com

- आप अपने शब्दों में लिखें और अपनी कक्षा में सुनाएँ।
  1. आप कैसे समाज के निर्माण की बात करेंगे ?
  2. आदर्श समाज के निर्माण में आपकी भूमिका क्या होनी चाहिए ?

परोपकार से बड़ा पुण्य नहीं, किसी को दुःखी करने से बड़ा पाप नहीं।

www.rajteachers.com

9 सदाचार

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज में रहकर वह कई तरह के काम करता है, परन्तु समाज के कुछ नियम हैं। नियमों के अनुकूल किया गया काम ही सदाचार कहलाता है, जैसे – गुरुजनों का आदर करना, सत्य बोलना, सेवा करना, किसी को कष्ट न पहुँचाना, मधुर वचन बोलना, विनम्र रहना, बड़ों का आदर करना आदि। ये उत्तम चरित्र के गुण हैं। जिस व्यक्ति के व्यवहार में ये गुण होते हैं, वह सदाचारी कहलाता है।

सदाचार शब्द दो शब्दों के मेल से बना है, सत्+आचार। 'सत्' का अर्थ है 'अच्छा' और 'आचार' का अर्थ है 'व्यवहार'। इस तरह सदाचार का अर्थ है 'अच्छा व्यवहार'। अच्छे व्यवहार से ही व्यक्ति के सदाचारी होने की पहचान होती है।

सदाचारी बनने के लिए ईमानदार होना आवश्यक है। जो व्यक्ति अपने प्रति ईमानदार होता है, वह सबके प्रति ईमानदारी बरतता है। चाहे सेवा की बात हो या कर्त्तव्य की, धन की बात हो या कमाई की, लेने की बात हो या देने की! सब में उसका व्यवहार ईमानदारीपूर्ण रहता है। ईमानदार व्यक्ति गरीब होते हुए भी धनी होता है, क्योंकि ईमानदारी के कार्यों से उसे सम्मान और आनंद मिलता है। बेईमान व्यक्ति धनी तो हो सकता है, परन्तु वह सम्मान और आनंद प्राप्त नहीं कर सकता। जो व्यक्ति सदाचारी होता है, वह अनुशासित एवं संयमी भी होता है। इन गुणों को उसके बोल–चाल, कार्य व्यवहार, खान–पान और रहन–सहन आदि में देखा जाता है। वह स्वयं अनुशासित रहकर अच्छे व्यवहार का परिचय देता है।

सत्य बोलना एक प्रकार की अखण्ड तपस्या है। झूठ बोलना अच्छा नहीं माना जाता। जो व्यक्ति हृदय से सत्य बोलने का व्रत लेता है, वह सदाचारी होता है। ऐसा व्यक्ति मरते दम तक सत्य बोलने का पालन करता है।

www.rajteachers.com

सदाचारी व्यक्ति जहाँ भी जाता है, प्रसन्न रहता है और अपने सम्पर्क में आने वालों को भी प्रसन्नता देता है। उसके पास सद्गुण तथा सद्व्यवहार का भण्डार होता है। वह झूठी प्रशंसा से प्रभावित नहीं होता। वह निर्भय होता है।

विपत्तियाँ तथा प्रतिकूल परिस्थितियाँ प्रायः सभी के जीवन में आती हैं, किन्तु सदाचारी व्यक्ति इनसे कभी विचलित नहीं होता। ऐसा व्यक्ति जीवन में कितनी भी बड़ी विपदा आ जाए तो भी उनसे मुकाबला करने की क्षमता रखता है। उसमें असीम धैर्य एवं सहनशक्ति जैसे महान गुण होते हैं। परोपकार करना उसका स्वभाव होता है। वह अपने कार्यों से सदा दूसरों का भला करता है। लोग उस पर विश्वास करते हैं। सभा हो या समुदाय, सदाचार से युक्त व्यक्ति सर्वत्र पूजा जाता है।

सदाचार सफलता का मार्ग है, जो व्यक्ति को मंजिल तक पहुँचाता है। अच्छे व्यवहार के कारण कठिन काम भी सहजता से बन जाते हैं। इसके द्वारा मनुष्य अपनी असीम शक्ति को प्रकट कर सकता है। सदाचार के बल पर असीम शक्ति को प्रकट करने वाला सामर्थ्यवान मनुष्य संत और महापुरुष के रूप में जाना जाता है। वह अपने महान कार्यों से महापुरुष कहलाता है। ऐसे ही महापुरुष हमारे आदर्श होते हैं। उनका सद्व्यवहार अनुकरणीय होता है। हमें परस्पर सद्व्यवहार करना चाहिए। सद्व्यवहार ही वास्तव में सदाचार है।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

सदाचार – अच्छा व्यवहार, नैतिक आचरण

संयम – नियंत्रण

सद्गुण – अच्छा गुण

www.rajteachers.com

विचरण — घूमना, फिरना
विपत्ति — संकट

उच्चारण के लिए

सद्‌गुण, सत्पुरुष, अखण्ड, संपर्क, विपत्तियाँ, परिस्थितियाँ, सर्वत्र, आदर्श, इज्जत, मनुष्य, शक्ति, सामर्थ्यवान

सोचें और बताएँ

1. सदाचार किसे कहते हैं ?
2. विपत्ति में क्या करना चाहिए ?
3. सद्‌गुण से क्या तात्पर्य है?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें
   (अ)मनुष्य एक .... है। समाज में रहकर वह कई तरह के काम करता है।
   (ब)सदाचारी बनने के लिए .... होना आवश्यक है।
2. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें
   (अ)उत्तम व्यक्ति के गुण हैं–
   (क) गुरुजनों का आदर करना (ख) मधुर बोलना
   (ग) विनम्र रहना (घ) उपर्युक्त सभी ( )
   (ब) सत्य बोलना एक प्रकार की तपस्या है–
   (क) खण्ड (ख) व्यावहारिक
   (ग) अखण्ड (घ) असत्य ( )
3. व्यक्ति के सदाचारी होने की पहचान किससे होती है ?
4. सदाचारी व्यक्ति में कौन–कौन से गुण होते हैं ?
5. प्रतिकूल परिस्थितियों में भी सदाचारी व्यक्ति विचलित क्यों नहीं होता है ?
6. सदाचार सफलता का मार्ग है, कैसे ?
7. महापुरुष हमारे आदर्श क्यों हैं ?

भाषा की बात

- शब्दांशों और शब्दों को जोड़कर नए शब्द बनाएँ और अर्थ जानें, जैसे–

www.rajteachers.com

अनु+शासन–अनुशासन, अनु+प्रेरणा–अनुप्रेरणा, अनु+रूप–अनुरूप आदि

बे+ईमान – ....

महा+पुरुष – ....

पर + उपकार –..

इस प्रकार अनु, बे, महा, पर आदि शब्दांश जो किसी अन्य शब्द के आगे लगते हैं वे उपसर्ग कहलाते हैं। ऐसे ही अन्य और उपसर्ग भी जानिए।

- विपरीत अर्थ वाले शब्द लिखें

सदाचार – दुराचार

ईमानदार – ....

सम्मान – ....

निर्भय – ....

अनुकूल – ....

सद्गुण – ....

यह भी करें–

- सदाचार के महत्त्व पर पाँच वाक्य लिखें।
- किन्हीं दो महापुरुषों के चित्रों को संकलित कर, 'मेरा संकलन' में चिपकाएँ और उनके बारे में अपने विचार लिखें तथा विद्यालय में आयोजित बाल–सभा, उत्सवों के अवसर पर सुनाएँ।

महापुरुष का चित्र लगाएँ	महापुरुष का चित्र लगाएँ

असत्य फूस के ढेर की तरह है। सत्य की एक चिंगारी भी उसे भस्म कर देती है।
हरिभाऊ उपाध्याय

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

कामधेनु

मेरे प्रिय पुत्रों/पुत्रियों!

हाँ, मैं प्रत्येक मनुष्य को बल, बुद्धि, आयु, आरोग्य, सुख, समृद्धि, ऐश्वर्य एवं कीर्ति देती हूँ। जो अनुभव करते हैं वो मुझे 'माता' कहते हैं और मैं भी उनको पुत्रवत् प्रेम करती हूँ।

पुत्र/पुत्रियों का कर्त्तव्य है, 'माँ' की सेवा करना 'माँ' की रक्षा करना, और 'माँ' का कर्त्तव्य है पुत्र/पुत्रियों को जीवन देना। मैं अनादि काल से विश्व का कल्याण करती आ रही हूँ, इसलिए मुझे विश्व की जननी कहते हैं। संसार में, मैं अंत तक अपना कर्त्तव्य निभाऊँगी। चाहे वह धर्मयुग हो या विज्ञान युग, पुत्र माँ से प्रेम करें या उसे कष्ट दें, मुझे तो मेरे पुत्रों/पुत्रियों से प्रेम करना ही है।

मैं दूध, दही, घी के रूप में "अमृत" प्रदान करती हूँ। जिससे मेरे पुत्रों/पुत्रियों को सत्वगुण संपन्न बनाती हूँ। मैं अपने 'मूत्र' और 'गोबर' के रूप में दवाइयाँ, खाद और कीट नियंत्रक भी देती हूँ। मैं अपनी संतान 'बैल' को खेती के लिए साधन स्वरूप देती हूँ। मैं अपने श्वास–प्रश्वास से वायुमण्डल को शुद्ध करती हूँ। मेरे चरण स्पर्श से रजकण को शक्तिमान बनाती हूँ। मेरे दूध, दही, घी, मूत्र, गोबर आदि को पंचगव्य कहते हैं। यह एक अद्भुत तथा सर्वशक्तिमान रसायन हैं। मनुष्य के लिए यह 'प्राण' है जो मेरी उपयोगिता समझेगा, वही मेरी सेवा करेगा। जिसके भाग्य में होगा वही अमृतमयी आनंद लूटेगा और उनके लिए मैं "माँ स्वरूपा कामधेनु हूँ।"

तुम्हारी
कामधेनु गौ माता

www.rajteachers.com

10 नारी शक्ति की प्रतीक

— भगिनी निवेदिता

अपने देश की बहुत कुछ कर गुजरने वाली महिलाओं से हमारा इतिहास भरा पड़ा है, परन्तु एक विदेशी महिला ने भारत के लिए जो कार्य किया, वह अनूठा है। भगिनी निवेदिता स्वामी विवेकानन्द से प्रभावित होकर उनके आह्वान पर भारत की महिलाओं को शिक्षित करने के लिए भारत आई थी। उनका जन्म आयरलैण्ड में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी

मातृभूमि के दर्शन किए और भारत की बेटी बनकर स्वतंत्रता आन्दोलन में क्रांतिकारी भूमिका निभाई।

उनका पूरा नाम 'मार्गेट एलिजाबेथ नोबेल' था। उनके पिता का नाम 'सेमुअल रिचमण्ड़ नोबेल' व माँ का नाम 'मैरी इसाबेला' था। बचपन में ही इनके माता–पिता का देहांत हो गया था। इनका लालन–पालन नाना हमिल्टन द्वारा किया गया था। हमिल्टन आयरलैण्ड के स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से एक थे। मार्गेट की शिक्षा लंदन चर्च के आवासीय विद्यालय में हुई।

मार्गेट को शिक्षण का कार्य अच्छा लगता था । अतः वह 17 वर्ष की उम्र में ही एक विद्यालय में पढ़ाने लगी। वह स्वयं द्वारा विकसित पद्धति से शिक्षा दिया करती थी। धर्म में रुचि होने के कारण चर्च की गतिविधियों में भी भाग लेती थी तथा अधिकांश समय अध्ययन, मनन एवं सत्य की खोज में ही लगाती थी ।

तभी एक घटना घटी, जो उनके जीवन को एक नया मोड़ देने वाली थी। एक संन्यासी का लंदन में आगमन हुआ। नाम था 'स्वामी विवेकानन्द'। स्वामी जी शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में ख्याति अर्जित कर अपने कुछ मित्रों के आग्रह पर इंग्लैण्ड आए थे।

www.rajteachers.com

मार्गेट की स्वामी जी से प्रथम भेंट यहीं हुई थी।

मार्गेट ने स्वामी जी के प्रवचन सुने, वाद–विवाद, तर्क–वितर्क किया और अपने आपको पूर्ण संतुष्ट कर लेने के उपरांत ही उन्होंने स्वामी जी को अपना आदर्श चुना और स्वामी जी के आग्रह पर उसने भारत आना तय कर लिया।

भारत आकर वो अत्यधिक प्रसन्न हुई। वे गंगा के किनारे वेलूर मठ की एक कुटिया में दो अन्य अमेरिकन महिलाओं के साथ रहने लगीं जो स्वामी जी की शिष्याएँ थीं। स्वामी जी ने मार्गेट को नया नाम निवेदिता दिया और आग्रह किया कि वह भगवान व भारत माता के चरणों में अपना जीवन अर्पित करें।

भगिनी निवेदिता ने विवेकानन्द के उपदेशों को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करने के साथ–साथ कलकत्ता में लड़कियों का एक स्कूल भी आरम्भ किया। वहाँ छोटी लड़कियों को पढ़ाने लिखाने के साथ–साथ मिट्टी का काम, चित्रकारी का काम आदि भी सिखाया। जब कलकत्ता में महामारी फैली तो निवेदिता ने टोली बनाकर दिन–रात भूख–प्यास की चिंता किए बिना रोगियों की चिकित्सा, सेवा–सफाई आदि कार्य कर पीड़ितों की मदद की। उन्होंने अंग्रेजी समाचार पत्रों में अपील प्रसारित कर मदद माँगी व धन संग्रह भी किया। वह लेखन कला एवं बोलने में निपुण थी। इस क्षमता का उपयोग कर वह अपनी बात बड़े–बड़े समूहों तक पहुँचाने में सफल रही।

निवेदिता ने जब अंग्रेजों का भारतीयों के साथ बर्बरतापूर्ण व्यवहार देखा तो वह पूर्ण ताकत के साथ भारत की स्वतंत्रता की लड़ाई का समर्थन करने लगी। उन्होंने बंगाल विभाजन का विरोध किया। उन्होंने जगदीश चन्द्र बोस की उपलब्धियाँ विश्व पटल पर रखी और महर्षि अरविन्द के जेल जाने के बाद, उनके 'कर्मयोगी' पत्र के लिए संपादकीय लिखने का कार्य भी करने लगी।

उन्हें भारतीय स्त्रियाँ अधिक प्रभावित करती थीं। उन्हें लज्जा, विनम्रता, स्वाभिमान, सेवाभाव, निष्ठावान, ममत्व आदि की प्रतिमूर्ति दिखाई देती थी। वह समय–समय पर महिलाओं को लक्ष्मी बाई, अहिल्या बाई के वीरतापूर्ण कार्यों को भी याद दिलाती थी। उनकी दृष्टि जाति, प्रांत व भाषा आदि से ऊपर थी।

भगिनी निवेदिता ने भारत को अपनाने के बाद कभी भी अनुभव नहीं होने दिया कि वह एक विदेशी है। उन्होंने भारत के लिए जो किया उसे कोई अन्य नहीं कर सकता था। वह भी स्वामी

www.rajteachers.com

जी की तरह ही 44 वर्ष की अल्पायु में नीचे उद्धृत वेद की पावन ऋचाओं का वे सदैव स्मरण करती हुई संसार से विदा हो गई।

"असतो मा सद्गमयः
तमसो मा ज्योतिर्गमयः
मृत्योर्मा अमृतं गमयः।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

विदेशी	–	दूसरे देश का
आह्वान	–	पुकार/बुलावा
मातृभूमि	–	जन्मभूमि
पद्धति	–	तरीका
प्रवचन	–	उपदेश देना
तर्क–वितर्क	–	वाद–विवाद
बर्बरता	–	क्रूरता
संपादकीय	–	संपादक का लिखा/अग्रलेख
भगिनी	–	बहिन

उच्चारण के लिए

निवेदिता, विवेकानन्द, शिक्षित, आयरलैण्ड, स्वतंत्रता, मार्गेट एलिजाबेथ, नोबेल, सेमुअल, रिचमण्ड, समर्थन, स्त्रियाँ, आह्वान, पद्धति

सोचें और बताएँ

1. मार्गेट का पूरा नाम क्या था ?
2. मार्गेट को नया नाम निवेदिता किसने दिया ?
3. भगिनी निवेदिता किस देश से भारत आई थी ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–
   (मातृभूमि, आयरलैंड, शिक्षण, देहांत)

www.rajteachers.com

(क) भगिनी निवेदिता का जन्म .... में हुआ, परन्तु उन्होंने भारत भूमि में अपनी .... के दर्शन किए।

(ख) बचपन में ही इनके माता–पिता का .... हो गया।

(ग) मार्गेट को .... का कार्य अच्छा लगता था।

2. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) 17 वर्ष की उम्र में भगिनी निवेदिता ने कार्य प्रारंभ कर दिया था–

(क) समाज सेवा करना (ख) पढ़ाई करना

(ग) पढ़ाने का काम करना (घ) आन्दोलन करना ( )

(ब) स्वामी विवेकानन्द ने ख्याति अर्जित की

(क) भारतीय सम्मेलन में

(ख) विदेशी सम्मेलन में

(ग) शिकागो के विश्व धर्म सम्मेलन में

(घ) राष्ट्रीय सम्मेलन में ( )

3. भगिनी निवेदिता के माता–पिता का क्या नाम था ?
4. भगिनी निवेदिता ने भारत देश के लिए कौन–कौन से कार्य किए ?
5. भगिनी निवेदिता को भारतीय महिलाओं की कौन–कौनसी विशेषताओं ने सर्वाधिक प्रभावित किया ?
6. जीवन की किस घटना ने भगिनी निवेदिता के जीवन को बदल दिया था ?
7. भगिनी निवेदिता वेद की कौनसी ऋचाओं का स्मरण करती थी ?

भाषा की बात

- निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ लिखें

  "असतो मा सद्‌गमयः
  तमसो मा ज्योतिर्गमयः
  मृत्योर्मा अमृतं गमयः"

- वीरता+पूर्ण मिलकर 'वीरतापूर्ण' शब्द बना। आप भी इस प्रकार 'पूर्ण' जोड़कर नए शब्द बनाकर उत्तरपुस्तिका में लिखें।

यह भी करें

www.rajteachers.com

- आप भी उन महिलाओं के नाम लिखिए जिन्होंने भगिनी निवेदिता की तरह देश के लिए कार्य किए हो–

क्रम संख्या	महिला का नाम	किए गए कार्य

- किन्हीं चार महान नारियों के चित्रों का संकलन करें।

एक नारी पढ़ेगी, सात पीढ़ी तरेगी।

www.rajteachers.com

11

नीति के दोहे

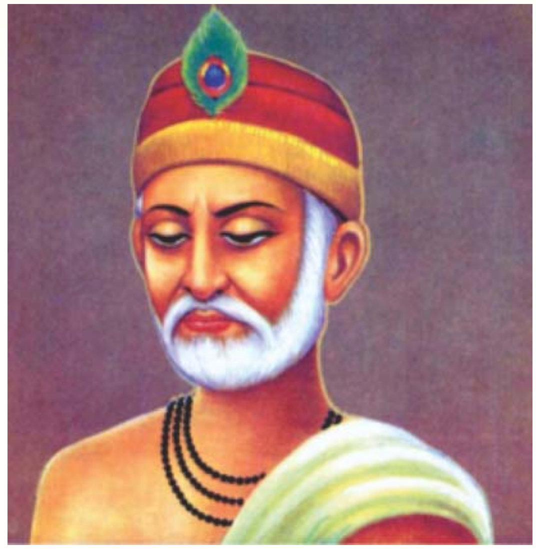

कबीर

बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल खोजा आपणा, मुझसा बुरा न कोय।।
गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पाय।
बलिहारी गुरु आपरी, गोविन्द दियो बताय।।
साईं इतना दीजिए, जामैं कुटुम समाय।
मैं भी भूखा ना रहूँ, साधु न भूखा जाय।।

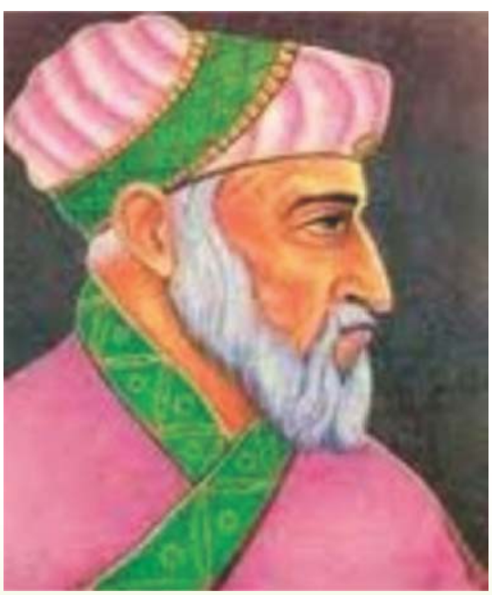

रहीम

रहिमन धागा प्रेम का, मत तोड़ो छिटकाय।
टूटे से फिर ना जुड़े, जुड़े गाँठ पड़जाय।।
बड़े बड़ाई ना करें, बड़े न बोले बोल।
रहिमन हीरा कब कहे, लाख हमारो मोल।।
तरुवर फल नहीं खात है, सरवर पिए न पान।
कह रहीम पर काज हित, संपत्ति संचहि सुजान।।
जे गरीब पर हित करै, ते रहीम बड़ लोग।
कहा सुदामा बापुरौ, कृष्ण मिताई जोग।।

www.rajteachers.com

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मिलिया	–	मिला
खोजा	–	खोजना
बलिहारी	–	न्योछावर
सरवर	–	तालाब
संचहि	–	संचय करते हैं
परहित	–	दूसरों की भलाई
साँई	–	ईश्वर, भगवान
कुटुम	–	कुटुम्ब, परिवार
साधु	–	सज्जन
छिटकाय	–	झटका देकर
तरुवर	–	पेड़
बापुरौ	–	असहाय / बेचारा
मिताई	–	मित्रता, दोस्ती

उच्चारण के लिए

कृष्ण, संपत्ति, कुटुम, तरुवर, मिताई

सोचें और बताएँ

1. गोविन्द से बड़ा किसको बताया गया है ?
2. बड़े लोगों की तुलना किससे की गई है ?
3. कृष्ण ने किसके साथ मित्रता निभाई थी ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) 'बुरा जो देखन मैं चला', का आशय है– जब मैं बुरे व्यक्ति को ढूँढने चला तो मुझे –

(क) बुरे ही बुरे मिले (ख) कोई बुरा नहीं मिला

(ग) कुछ बुरे–कुछ भले मिले (घ) सब भले ही भले मिले ( )

(ब) बड़े बड़ाई न करे .... दोहे में हीरा अपना महत्त्व (मूल्य) इसलिए नहीं बताता है, क्योंकि –

(क) वह बोल नहीं सकता है। (ख) उसे अपना मूल्य मालूम नहीं है।

www.rajteachers.com

(ग) न बताना बड़प्पन की निशानी है। (घ) लाख रुपये का मोल कम है। ( )

2. दोहे लिखकर बताएँ
   (अ) कबीर के किस दोहे में 'प्रेम' का महत्तव बताया गया है ?
   (ब) गुरु पर न्योछावर होने का भाव किस दोहे में है ?
   (स) "सरोवर स्वयं पानी नहीं पीता है", अर्थ बताने वाला दोहा लिखें।
3. 'मुझसा बुरा न कोय', क्यों कहा गया हैं ?
4. गुरु को गोविन्द से भी बड़ा क्यों बताया जाता है ?
5. 'टूटे से फिर ना जुड़ै, जुड़ै गाँठ पड़ जाय।' का क्या आशय है ?
6. 'बड़े बड़ाई ना करे ....' दोहे के अनुसार बड़े आदमी अपनी प्रशंसा स्वयं क्यों नहीं करते ?
7. दोहे की पंक्ति को पूरा करें
   (अ) बुरा जो देखन मैं चला, ... ।
   (ब) ...., साधु न भूखा जाय।
   (स) रहिमन धागा प्रेम का, ... ।
   (द) .... पिय न पान।

भाषा की बात

- मोहन ने मीठा दूध पीया। वाक्य में 'दूध' शब्द से पहले मीठा शब्द आया है जो दूध के मीठा होने की विशेषता बता रहा है। विशेषता बताने वाले शब्द विशेषण कहलाते हैं। नीचे कुछ शब्द दिए गए हैं। उनके आगे विशेषण जोड़ें–

  कच्चा, घना, चमकीला, गहरा, मोटी, भला

  जैसे – भला आदमी .... गाँठ

  ....तालाब .... हीरा

  .... पेड़ .... धागा

यह भी करें–

- दोहे याद कर अपनी प्रार्थना सभा में व शनिवारीय बाल सभा में गाएँ।
- अपने से बड़ों से दोहे सुनें और समझें ।

> चरित्रहीन शिक्षा, मानवता विहीन विज्ञान और नैतिकता विहीन व्यापार खतरनाक होते हैं। –सत्य साँई बाबा

www.rajteachers.com

12 मजेदार कबड्डी

कबड्डी........! कबड्डी ....! कबड्डी..........! पकड़ो, पकड़ो ....! आउट.....! आउट .....! टीना आउट, चल गीता अब तू कबड्डी देने जा .... (उच्च प्राथमिक विद्यालय के सामने कबड्डी के अभ्यास का दृश्य। शारीरिक शिक्षक खेल प्रतियोगिता हेतु छात्र–छात्राओं को अभ्यास करवाते हुए)

शारीरिक शिक्षक – पी.... पी.... विशल (सीटी) बजाते हुए चलो बच्चो! अब कुछ समय अभ्यास की बजाय विश्राम होगा .... चलो–चलो, सभी इस पेड़ की छाया में बैठ जाओ। आज मैं आपको कबड्डी के खेल की मजेदार जानकारी दूँगा। क्या सब सुनोगे ?

(हाँ गुरुजी ...... सब बच्चे एक साथ चिल्ला उठे, बड़ा मजा आएगा !)

माँगीलाल	–	गुरुजी! देखो इस मोहन ने मेरा नेकर फाड़ दिया।
मोहन	–	और गुरुजी! तब मांगीलाल ने मेरा गला पकड़ लिया था।
शारीरिक शिक्षक	–	हँसते हुए .... देखो भाई, लड़ाई बंद करो! वैसे भी कबड्डी में बाल, गला, नेकर या बनियान पकड़ना फाउल है ।
टीना	–	यह फाउल क्या होता है ?
शारीरिक शिक्षक	–	मैच के दौरान गलत खेल अथवा नियम टूटने पर रेफरी फाउल का इशारा करता है ।
सकीना	–	गुरुजी। यह रेफरी कौन होता है ?
शारीरिक शिक्षक	–	मैच खिलाने वाले रेफरी, अम्पायर, निर्णायक आदि कहलाते हैं।
गीता	–	हाँ अब समझी .... इनके गले में लाल, काली विशल भी लटकी होती है।
मोहन	–	और वो ऐसे बजाते भी हैं, (मुँह से सीटी बजाते हुए ...... ।) (सभी बच्चे एक साथ ठहाका लगाते हैं.......... ।)
सलीम	–	गुरुजी! कबड्डी, कबड्डी का उच्चारण तो बिना साँस तोड़े होता है।
जसबीर	–	और कबड्डी के दौरान बीच में साँस टूटी तो आउट।
शारीरिक शिक्षक	–	अरे वाह ..... अब तो आप बहुत कुछ जान चुके हो !

www.rajteachers.com

गोपाल – कबड्डी में क्या थप्पड़ भी लगा सकते हैं ?

(सब जोरदार ठहाका लगाते हैं)

शारीरिक शिक्षक – अरे भाई! अभी बताया न। थप्पड़, घूंसा आदि गंभीर फाउल होता है और वैसे भी कबड्डी का खेल, प्यार, शिष्टाचार, राष्ट्रीयता, अनुशासन, एकता, समानता आदि गुणों से भरा होता है।

गौरव – कबड्डी खेलने से और क्या–क्या लाभ होते हैं ?

शारीरिक शिक्षक – अति सुन्दर प्रश्न! स्वस्थ व सुगठित शरीर, तेज दिमाग, प्रसन्न मन, देश के लिए खेलने की लालसा आदि लाभ ही लाभ हैं।

सिद्दार्थ – कबड्डी देने वाले और उन्हें पकड़ने वाले को क्या कहते हैं ?

शारीरिक शिक्षक – शाबाश! कबड्डी, कबड्डी का उच्चारण करते हुए विपक्षी पाले में जाने वाले खिलाड़ी को 'रेडर' व पकड़ने वाले को "केचर" कहते हैं ।

लालूराम – गुरुजी..... गुरुजी..... यह पाला क्या होता है ?

शारीरिक शिक्षक – आयु, वर्ग आदि के नियमानुसार कबड्डी का मैदान (कबड्डी कोर्ट) होता है, जिसे आप लोग पाला भी कहते हो। इसकी

www.rajteachers.com

लम्बाई 11 मीटर व चौड़ाई 8 मीटर होती है ।

जसबीर – क्या यह खेल दिन भर खेला जाता है ?

शारीरिक शिक्षक – नहीं। नियमानुसार हर खेल का समय निर्धारित होता है। आपको वर्ग की कबड्डी में 15–15 मिनट की दो पारियाँ व बीच में 5 मिनट का अंतराल होता है। प्रत्येक टीम में 7–7 खिलाड़ी खेलते हैं।

शकीना – गुरुजी! बड़ा अच्छा लग रहा है और भी आवश्यक जानकारी बताइए ना....।

शारीरिक शिक्षक – अवश्य। आप जैसे विद्यार्थी सबको प्रिय होते हैं, जिनमें ज्यादा सीखने की लालसा हो व अनुशासित और मेहनती हो.... आप और प्रश्न करें..... मैं बताऊँगा ।

गीता – कबड्डी में अंक कैसे मिलते हैं ?

शारीरिक शिक्षक – 'रेडर' जितने खिलाड़ियों को छूकर वापस सुरक्षित अपने कोर्ट में चला जाए उतने अंक या 'रेडर' पकड़ा जाए तो एक अंक इस प्रकार विभिन्न नियमों के अंतर्गत टीमों को अंक मिलते हैं। अंत में समय पूरा होने पर ज्यादा अंक प्राप्त करने वाली टीम को विजेता घोषित किया जाता है ।

गौरव – क्या हमारे देश की भी कोई कबड्डी टीम है ?

शारीरिक शिक्षक – बिल्कुल! अब तक हमारा देश भारत पूरे एशिया महाद्वीप का कबड्डी चैम्पियन है। यह गौरव की बात है ।

सलीम – क्या हमें पढ़ाई की तरह खेलों में भी आगे मदद व प्रोत्साहन मिलेगा ?

शारीरिक शिक्षक – अवश्य! अवश्य! कबड्डी ही नहीं वरन् हर खेल आप खेल सकते हैं, जैसे– फुटबॉल, हॉकी, कुश्ती, खो–खो, बेडमिंटन, वॉलीबॉल, बास्केट–बॉल आदि।

माँगीलाल – वाह गुरुजी! अब तो नियमों के साथ खेलने में आनंद बढ़ जाएगा।

शारीरिक शिक्षक – हाँ। खेल को भी पढ़ाई की तरह पूरी मेहनत, लगन व एकाग्रता

www.rajteachers.com

से खेलना चाहिए। एकाग्रता के लिए मैं आपको दो पंक्तियाँ सुनाता हूँ–

खेलो तो इतना खेलो कि खेल पढ़ाई बन जाए।
और पढ़ो तो इतना पढ़ो की पढ़ाई खेल बन जाए।।
(बच्चों द्वारा जोरदार तालियों की गड़गड़ाहट)

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

पारम्परिक	–	पुराने समय से प्रचलित
विशल	–	सीटी
लोकप्रिय	–	लोगों को प्रिय
लालसा	–	इच्छा
शिष्टाचार	–	सभ्य व्यवहार
निर्धारित	–	निश्चित किया गया

उच्चारण के लिए

कबड्डी, आउट, रेफरी, इशारा, निर्णायक, राष्ट्रीयता, अनुशासन, सुगठित, प्रसन्न, शाबाश, विद्यार्थी, अंतर्गत, महाद्वीप, चैम्पियन, प्रोत्साहन

सोचें और बताएँ

1. कबड्डी के खेल की मजेदार जानकारी कौन दे रहे थे ?
2. कबड्डी खेलने के मैदान को हम किस नाम से जानते हैं ?
3. लेखक ने कबड्डी के खेल में कौनसे गुण बताए हैं ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) भारत कबड्डी में कौनसे महाद्वीप का चैम्पियन है –

(अ) अफ्रीका (ब) एशिया
(स) आस्ट्रेलिया (द) यूरोप ( )

(ब) कबड्डी से लाभ होते हैं –

(अ) उत्तम स्वास्थ्य (ब) सुगठित शरीर

www.rajteachers.com

(स) मानवीय गुण (द) उपर्युक्त सभी ( )

2. सही व गलत का निशान लगाइए–

(अ) कबड्डी में पकड़ने वाले को केचर कहते हैं। ( )

(ब) कबड्डी देने वाले को रेडर कहा जाता है। ( )

(स) खेलते समय एक दल में आठ खिलाड़ी होते हैं। ( )

(द) भारत कबड्डी में एशियन चैम्पियन है। ( )

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(अ) नियमों के साथ खेलने से आनंद .... जाएगा। (बढ़/घट)

(ब) खेलो तो इतना खेलो की खेल .... बन जाए। (लड़ाई/पढ़ाई)

(स) प्रतियोगिता में मैच कराने वाले को .... कहा जाता है। (निर्णायक/वकील)

4. कबड्डी कोर्ट की लम्बाई एवं चौड़ाई कितनी होती है।

5. कबड्डी खेल के मुख्य लाभ लिखिए।

6. खेल को कैसे खेलना चाहिए ?

7. इनके बारे में क्या समझे ? उत्तर लिखें।

(अ) रेडर – ....

(ब) केचर – ....

(स) निर्णायक – ....

(द) कबड्डी कोर्ट – ....

भाषा की बात

- नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखें–

(अ) ज्यादा – ....

(ब) सरल – ....

(स) दंड – ....

- सु+गठित मिलकर सुगठित बना। यहाँ पर 'सु' शब्दांश का प्रयोग हुआ है। आप भी 'सु' शब्दांश जोड़कर नए शब्द बनाएँ।

यह भी करें

- आपके आस–पास खेले जाने वाले खेलों की सूची बनाएँ।

www.rajteachers.com

- साथियों के साथ कबड्डी के नियमों को जाने दूरदर्शन पर अथवा खेल प्रतियोगिता को देखकर कबड्डी जानने, समझने का प्रयास करें ।

- भारत के विभिन्न खिलाड़ियों के चित्रों को एकत्र कर 'मेरा संकलन' में चिपकाएँ।

- आप और कौनसे खेल पसंद करते हैं ?

खेल	हाँ	नहीं
खो–खो	....	....
कुश्ती	....	....
हॉकी	....	....
क्रिकेट	....	....
फुटबॉल	....	....
बेडमिंटन	....	....

- निम्न सारणी की पूर्ति अपनी उत्तर पुस्तिका में करें–

खेल का नाम	खेलने में काम आने वाली सामग्री

- ड्राईंग–शीट पर कबड्डी कोर्ट का नामांकित चित्र बनाओ।

असफलता यह बताती है कि सफलता का प्रयत्न पूरे मन से नहीं किया गया है।

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

खो–खो

शाला के प्राँगण में खो–खो
खेल रही हैं बेटियाँ।

लंबी रेखा पर फुर्तिली–सी
दौड़ रही हैं बेटियाँ।
कुछ दाएँ कुछ बाएँ मुँह
एक एक खो–खो दे
खेल रही हैं बेटियाँ।।

कुछ दौड़कर पीछा करती
देखो भागी जाती।
मौका पाकर खो देकर
खुद पाले पर आ जाती।।

होती कोई खेल से बाहर
कोई दौड़ लगाती।
शामिल होती भीड़–भाड़ में
ताली खूब बजाती।।

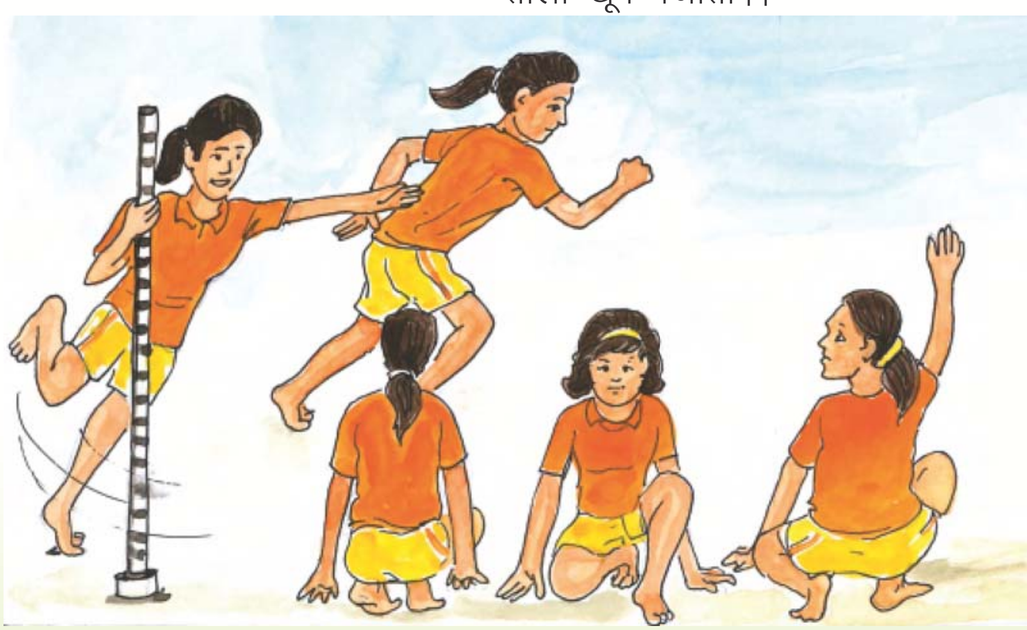

www.rajteachers.com

13

किताबें

किताबें करती हैं बातें
बीते जमानों की दुनिया की,
इंसानों की आज की,
कल की एक–एक पल की।
खुशियों की, गमों की,
फूलों की, बमों की
जीत की, हार की
प्यार की, हार की
प्यार की, मार की।
क्या तुम नहीं सुनोगे
इन किताबों की बातें ?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।
किताबों में चिड़ियाँ चहचहाती हैं।
किताबों में खेतियाँ लहलहाती हैं
किताबों में झरने गुनगुनाते हैं
परियों के किस्से सुनाते हैं।
किताबों में रॉकेट का राज़ है
किताबों में साइंस की आवाज़ है
किताबों का कितना बड़ा संसार है
किताबों में ज्ञान की भरमार है।
क्या तुम इस संसार में
नहीं जाना चाहोगे ?
किताबें, कुछ कहना चाहती हैं।
तुम्हारे पास रहना चाहती हैं।

– सफ़दर हाशमी

www.rajteachers.com

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

ज़माना	–	काल, युग
राज़	–	रहस्य, भेद
इंसान	–	मनुष्य
सांइस	–	विज्ञान

सोचें और बताएँ

1. किताबें क्या करती है ?
2. किताबें किन–किन की बातें करती है ?
3. किताबें क्या करना चाहती है ?

लिखें

1. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–
   (अ) किताबें .... चाहती हैं।
   (ब) किताबों में .... की आवाज है।
   (स) किताबों में .... की भरमार है।
2. किताबों में किसका राज़ है ?
3. किताबों से तुम्हें किन–किन बातों की जानकारी मिलती है ?
4. किताबें जमाने की व इंसानों की बातें कैसे करती है ?
6. यदि किताबें नहीं होती तो क्या होता ? अपने विचार लिखें।

भाषा की बात

- इनकी आवाज को नाम दो –

(अ) चिड़िया के बोलने की	–	चहचहाट
(ब) पत्तों के हिलने की	–	....
(स) बादल के गरजने की	–	....
(द) नदी के बहने की	–	....

- पाठ में फूल शब्द आया है – फूल को सुमन, कुसुम, प्रसून आदि भी कहते हैं। इन शब्दों

www.rajteachers.com

को समानार्थी कहते हैं। इसी प्रकार निम्न शब्दों के समानार्थी शब्द लिखिए–

संसार – ....
हवा – ....
पानी – ....
आकाश – ....
किताबें – ....
मनुष्य – ....
बादल – ....

यह भी करें

- इस कविता को मौखिक रूप से याद कर कक्षा में सुनाएँ।

सत्यं शिवं सुंदरम्।

www.rajteachers.com

14

स्वर्ण नगरी की सैर

भारत की पश्चिमी सीमा का सजग प्रहरी है जैसलमेर। इसे स्वर्णनगरी, हेम नगर, भड़ किवाड़ आदि नामों से भी जाना जाता है। रेतीले धोरों ने जीवन को दुर्गम बना रखा है, लेकिन यहाँ की सुंदरता देख लोग दाँतों तले अंगुली दबा लेते हैं। हमने सुना था, जिस प्रकार लाखों लोगों के अंगूठे पर बनी रेखाएँ मेल नहीं खाती, वैसे ही यह स्वर्णनगरी विश्व के किसी शहर से मेल नहीं खाती है।

इतनी सारी बातें सुनने के बाद हमारी पूरी पाँचवीं कक्षा के विद्यार्थियों ने घूमने का निर्णय किया। सर्दी की छुट्टियों में हिंदी के अध्यापक संदीप जी के साथ हम जैसलमेर के लिए रवाना हुए। बीकानेर से रेल रात में चली। बरकत, मुरली, रोनित, किशोरी और हम सभी हँसी–खुशी, मज़ाक करते सो गए।

सुबह जैसलमेर के करीब पहुँचे तो देखा सूरज की किरणें जैसलमेर दुर्ग के पाषाण कणों को चमका रही हैं। जैसलमेर पहुँचे। होटल में ठहरे। तैयार होकर घूमने निकले। सबसे पहले किले को देखना तय हुआ। किला त्रिकूट पहाड़ी पर बना हुआ है। इसे त्रिकूटगढ़ नाम से भी जाना जाता है। महारावल राव जैसल ने इसका निर्माण करवाया। हम प्रथम पोल, अखैपोल से होते हुए दुर्ग के ऊपर पहुँचे। किले की सड़क भी पत्थरों की बनी हुई है। वहाँ हमने रंग महल, मोती महल, जैन मंदिर देखे। लक्ष्मीनाथजी के दर्शन भी किए।

www.rajteachers.com

इनके पत्थरों पर कलात्मक खुदाई वाली देवी–देवताओं की प्रतिमाएँ बनी हुई हैं। दुर्ग के चारों ओर निन्यानवे बुर्ज हैं। ये बुर्ज दुर्ग को मजबूती प्रदान करते हैं।

इसे हवेलियों व झरोखों की नगरी भी कहते हैं। यहाँ पटवों की हवेली, नथमल की हवेली, सालम सिंह की हवेली आदि दर्शनीय हवेलियाँ हैं। इनके झरोखों पर की गई नक्काशी लाजवाब है। इनका सौंदर्य देख हम आश्चर्यचकित रह गए।

हवेलियाँ देखने के बाद हम गड़ीसर गए। यह तालाब सदियों से यहाँ के वाशिंदों की प्यास बुझाता आया है। यहाँ का प्रत्येक पत्थर सौंदर्य बिखेरता नज़र आता है। इसी की पाल पर मुक्तेश्वर मंदिर व बगीचियाँ बनी हुई हैं। दर्शन, मोहित, अनुराग को थकान महसूस होने लगी। हम होटल में जाकर आराम करने लगे। दूसरे दिवस हमने बादल विलास और जवाहर विलास देखे। अमर सागर के जैन मंदिर व कुलधरा देखकर हम सम पहुँचे। वहाँ रेत का अथाह समंदर हमें बरबस ही अपनी ओर खींचता है। हम सम के धोरों की मखमली रेत पर खूब नाचे गाए। वहाँ ऊँट की सवारी ने बहुत रोमांचित किया। सूर्यास्त ने अपनी लालिमा बिखेरी और हम जैसलमेर लौट आए।

रात में कैर–साँगरी, पंचकुटा की सब्जी व दाल–बाटी चूरमा का आस्वादन किया। अगले दिवस बड़ाबाग की छतरियाँ और वुडफोसिल पार्क को देखा। बस का रुख पोकरण की ओर हुआ। पोकरण का शक्तिस्थल देखकर सभी का सीना गर्व से फूल गया। सेवली गाँव स्थित कदलीवन धाम के भी दर्शन किए। बस बीकानेर की

www.rajteachers.com

ओर चल पड़ी।

हम सभी आज भी इस यात्रा को याद करते हैं, तो रोमांचित हो जाते हैं। उस समय खींचे गए चित्र आज भी उस यात्रा की याद ताजा कर देते हैं। वास्तव में वह यात्रा भुलाएं नहीं भूलती।

वुड़ फोसिल पार्क –

जैसलमेर से बाड़मेर की ओर जाने पर जैसलमेर शहर से पंद्रह किलोमीटर दूर आकल गाँव में दर्जनों पेड़ थे। जो हजारों वर्षों तक विभिन्न मौसमों की चोटें सहते–सहते पेड़ों की लकड़ी जो पत्थर में बदल गई। उस पार्क को राज्य सरकार द्वारा संरक्षित किया गया है ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

स्वर्णनगरी	–	सोने–सा शहर
दुर्गम	–	मुश्किल
पाषाण	–	पत्थर
नक्काशी	–	पत्थर पर की गई कारीगरी
पोल	–	बड़ा द्वार
प्रतिमाएँ	–	मूर्तियाँ
आस्वादन	–	स्वाद लेना
रुख	–	मुँह, दिशा

उच्चारण के लिए

पश्चिमी, स्वर्णनगरी, अंगूठे, कलात्मक, झरोखों,

सोचें और बताएँ

1. किला किस पहाड़ी पर बना हुआ है ?
2. जैसलमेर दुर्ग का निर्माण किसने करवाया ?
3. गड़ीसर पाल पर बने मंदिर का क्या नाम है ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर छाँटकर कोष्ठक में लिखें

(अ) दुर्ग के प्रथम द्वार का नाम है –

(क) गणेश पोल (ग) सूरज पोल

www.rajteachers.com

(ख) अखै पोल (घ) हवा पोल ( )

(ब) दुर्ग के चारों ओर बुर्ज हैं –

(क) नौ (ग) निन्यानवे

(ख) उन्नीस (घ) नवासी ( )

(स) शक्तिस्थल स्थित है –

(क) पोकरण में (ग) स्वर्ण नगरी में

(ख) बीकानेर में (घ) सम में ( )

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति करें–

(अ) .... विश्व के किसी भी शहर से मेल नहीं खाती ।

(ब) किले की सड़क भी............................ की बनी है ।

(स) वहाँ ऊँट की सवारी ने बहुत........................ किया।

(द) सेलवी गाँव स्थित.................................... के दर्शन किए ।

3. जैसलमेर में रेत का अथाह समंदर कहाँ स्थित है ?

4. जैसलमेर दुर्ग का नाम लिखें ।

5. जैसलमेर किले में स्थित दर्शनीय स्थलों के नाम लिखें ।

6. ''इसे हवेलियों व झरोखों की नगरी भी कहते हैं।" क्यों ?

7. स्वर्ण नगरी में दर्शनीय स्थलों की क्या–क्या विशेषताएँ है ?

भाषा की बात

- इस पाठ में "किले" को दुर्ग भी कहा गया है आप भी निम्न शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखें–

  पाषाण –

  तालाब –

  बगीचा –

  मंदिर –

- पाठ में आए मुहावरों की सूची बनाइए।

यह भी करें

www.rajteachers.com

- पाठ में जैसलमेर यात्रा का वर्णन है। आप ने भी अपने आस–पास के दर्शनीय स्थलों की यात्रा की होगी आप द्वारा की गई यात्रा के बारे में अपनी कक्षा में सुनाइए।
- स्वर्ण नगरी के संबंध में मुख्य बातें बाल सभा में सुनाएँ।
- स्वर्ण नगरी के मुख्य दर्शनीय स्थलों के चित्रों का संग्रह कर एलबम बनाएँ।

सदैव आगे बढ़ने की लगन का नाम ही जीवन है।
–प्रेमचंद

www.rajteachers.com

15

पन्ना का त्याग

"बुंदेले हर बोलो के मुँह, हमने सुनी कहानी थी;
खूब लड़ी मर्दानी वह तो, झाँसी वाली रानी थी।''

ये पंक्तियाँ गुनगुनाता हुआ खूबीलाल घर में आया और जैसे ही अपना बस्ता मेज पर रखकर लौटना चाहा तो देखा कि जीजी खिड़की के पास बैठी हुई बड़े ध्यान से कोई पुस्तक पढ़ रही है।

"जीजी" "..................."

"जीजी ! ओ जीजी!''

"हाँ, आ गए खूबी ?''

"हाँ, आ गया। तुम तो पढ़ने में इतनी डूब गई थी कि मेरे आने का भी पता नहीं चला। सुनो जीजी, आज हमारी बाल–सभा में बड़ा मजा आया।''

"अच्छा ! क्या हुआ ?''

"अन्त्याक्षरी हो रही थी न! रवीन्द्र का नम्बर आया तो "ब" से आरम्भ होने वाली कविता उसे आई ही नहीं । तब मैंने वह पंक्ति बोल दी .... बुंदेले हर बोलो के मुँह........... ।"

"तो इसमें कौनसी बड़ी बात हो गई ?''

"सुन तो सही, जीजी ! मैंने एक पंक्ति बोली थी न ? कुछ लड़कों ने हल्ला कर दिया और कहा – पूरी कविता बोलो, पूरी कविता बोलो। मैंने खूब जोरदार स्वर में सुना दी। इतनी तालियाँ बजी जीजी, कि कुछ पूछो मत।''

"अच्छा! तभी तुझे बड़ा मजा आया।" जीजी ने हँसकर कहा ।

"हूँ" खूबीलाल ने कहा। फिर पूछा, "तुम क्या पढ़ रही थी, जीजी ?''

"नारी की कहानी है – नाम है उसका पन्ना धाय" "पन्ना धाय ?''

"हाँ।''

"वह नाटक तो तुम्हारे पाठ्यक्रम में है न ?'' खूबीलाल ने जीजी के निकट आकर भोलेपन से पूछा।

जीजी ने हँसकर कहा, "मैं तेरा मतलब समझ गई। तू अब कहेगा – मेरी अच्छी जीजी,

www.rajteachers.com

मुझे उस नाटक की कहानी सुना दो न।''

खूबीलाल हँसने लगा।

"सुनो खूबी, झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई, रानी दुर्गावती, बेगम चाँद बीबी, अहिल्याबाई इत्यादि तो वे महिलाएँ हैं, जिनके पास शक्ति थी संगठन का बल था; मगर मैं जिस नारी की कहानी कह रही हूँ उसका महत्त्व इस दृष्टि से अधिक है कि वह रानी नहीं थी, बेगम नहीं थी, वह एक धाय माँ थीं और जो कुछ उसने अपने राज्य के लिए, अपने स्वामी के लिए किया, वैसा सम्भवतः आज तक दुनिया में कोई नहीं कर पाया।''

"कल्पना करो भैया कि एक माँ के सामने उसके एक मात्र लाड़ले बेटे की अत्याचारी द्वारा तलवार से टुकड़े–टुकड़े कर दिए जाए तो उस माँ के मन पर क्या बीतेगी ?''

"क्या ऐसा भी हो सकता है ?''

"हाँ ! मगर पन्नाधाय की कहानी मजबूरी की कहानी नहीं थी, खूबी ! स्वेच्छा से किए गए त्याग और बलिदान की कहानी थी।''

"सुनो ! चित्तौड़गढ़ में महाराणा संग्राम सिंह की मृत्यु के बाद बड़ी अव्यवस्था फैल गई। उनके बड़े पुत्र भोजराज पहले ही कालग्रस्त हो गए थे, दूसरे पुत्र विक्रम सिंह चौदह–पन्द्रह वर्ष के थे और सबसे छोटे उदय सिंह केवल सात–आठ वर्ष के। उदयसिंह की देखभाल पन्ना धाय करती थी। उसके भी एक पुत्र था – चन्दन, उदय सिंह जितना ही बड़ा।''

"महाराणा संग्राम सिंह के निधन के बाद विक्रमसिंह का राजतिलक किया गया। मगर, एक दासी पुत्र बनवीर उस समय भयंकर षड्यंत्र में लगा हुआ था । उसने छोटे–बड़े कर्मचारियों को अपनी ओर मिला लिया था और चित्तौड़ की राजगद्दी पर घात लगाए बैठा था।''

"खूबीलाल, थोड़ी कल्पना करो कि जहाँ अधिकाँश कर्मचारी पथ–भ्रष्ट हों गए हो और अबोध राजकुमार राजनीति की चाल से अनभिज्ञ हों, वहाँ क्या परिणाम हुए होंगे।''

खूबीलाल स्तब्ध होकर सुन रहा था ।

बोला, "सचमुच उनकी स्थिति कठिन हो गई होगी, जीजी।''

"कठिन ही नहीं, खूबी ! भयंकर रूप से दुर्भाग्यपूर्ण हो गई थी। उस महादुष्ट ने एक चाल चली थी। नवरात्र में उसने सारे चित्तौड़ में नाच–रंग का आयोजन कराया था और उसमें विशेष रूप से दोनों राजकुमारों को बुलाने की योजना बनाई थी।''

'अच्छा'

www.rajteachers.com

"हाँ, उसकी योजना थी कि नाच–रंग में लगी जनता को धोखे में रखकर वह दोनों की हत्या कर देगा और तब उसका मार्ग निष्कंटक हो जाएगा। विक्रमसिंह तो उस धोखे में आ गया; मगर, उदयसिंह पर पन्ना धाय ढाल बनकर छाई हुई थी, इसलिए वह उसे धोखे में नहीं फँसा सका। बनवीर भी जानता था कि जब तक पन्नाधाय है तब तक उदयसिंह को धोखे से मारना संभव नहीं होगा। उधर पन्नाधाय को भी पता लग गया था कि नगर–व्यापी नाच–रंग के बीच हत्याकांड करने वाला है। मगर, वह उदयसिंह को लेकर कहीं बाहर भी नहीं जा सकती थी।''

क्यों जीजी ?

"बनवीर के आदमी सब और चौकसी पर थे और बाहर निकलना निरापद नहीं था। महल में उसे छिपाने से भी कोई लाभ नहीं था, क्योंकि सभी और बनवीर के भेदिये मौजूद थे।''

इस भयंकर संकट में पन्नाधाय ने अपने मन में एक ऐसा दृढ़ संकल्प कर लिया था जैसा कोई माँ शायद नहीं कर सकेगी।

उसने उदयसिंह को नाच–रंग में नहीं जाने दिया था, इसलिए वह रूठकर रसोईघर में ही सो गया था। कीरत नाम का बारी पन्नाधाय का भक्त था, वह महलों से जूठी पत्तलें इकट्‌ठी करके ले जाने का काम करता था। पन्नाधाय ने उसे सिसोदिया वंश की आन बचाने के लिए यह काम सौंपा कि वह अपने टोकरे में उदयसिंह को छिपाकर चित्तौड़ के किले से बाहर पहुँचा दे और पन्नाधाय के वहाँ आने तक उसकी रक्षा करे।

कीरत बारी बात और धर्म का धनी था। उधर कीरत गया और इधर पन्नाधाय का एक मात्र बेटा – चंदन, तमाशा देखकर लौटा । वह माँ से राजकुमार उदय सिंह के बारे में पूछता रहा (क्योंकि वे दोनों प्रायः साथ–साथ ही खाना खाते थे) पर माँ ने हाँ–हूँ करते हुए उसे उदय

www.rajteachers.com

सिंह के शयनकक्ष में ही लाकर खाना खिलाया; प्यार किया और फिर उदयसिंह के पलंग पर ही उसे बिठाकर किसी गहरी चिंता की छाया में डूबे–डूबे कई अच्छी–अच्छी कहानियाँ सुनाई। माँ की ममता की छाती पर पत्थर रखकर वह सब कुछ कर रही थी, जो दुनिया की कोई माँ कभी नहीं कर सकती। राज्य की रक्षा पर, राजवंश की रक्षा पर, चित्तौड़ के गौरव की रक्षा पर, सत्य और निष्ठा की रक्षा पर आज माँ की ममता की कठोर परीक्षा थी।

अबोध चंदन माँ के दुलार की छाया में शीघ्र ही निद्रामग्न हो गया – सो गया; ऐसी नींद सो गया कि उस नींद का सवेरा आज तक नहीं हुआ।

थोड़ी देर में षड्यंत्री हत्यारा बनवीर विक्रम सिंह के खून से रंगी तलवार लेकर उदयसिंह के कक्ष में घुसा। पन्ना से कड़क कर उसे धिक्कारा, फटकारा, मगर राज्य के नशे में पागल उस दुष्ट ने अट्टहास करते हुए कहा – "पन्ना आज भवानी मुझ पर प्रसन्न है देख ! इस तलवार की धार पर सिसोदिया वंश के दोनों सपूतों का खून अब एक होने वाला है। आज तू उदयसिंह को मेरे हाथ से नहीं बचा सकेगी।''

एक बार माँ की ममता ने सिर उठाया और पन्ना बनवीर के सामने गिड़गिड़ाने लगी – "अरे, नीच ! पातकी !! अबोध बालकों की हत्या करके तू क्या बहादुरी बखानता है ? तू उदयसिंह की हत्या न कर; मैं उसे लेकर कहीं दूर चली जाऊँगी ! कुछ तो दया कर!'' मगर, बनवीर का अट्टहास सुनकर उसका क्षत्रियत्व जाग उठा और वह कटार लेकर बनवीर पर टूट पड़ी। भाग्य दुष्टों का भी साथ दे देता है, खूबी! बनवीर की बाँह में ही कटार का वार कर बैठी और क्रोध से फुँफकारते हुए उसने पलंग पर सोए बच्चे पर तलवार चला दी। पलंग पर से चीख तक नहीं उठी; माँ के कलेजे को भेदकर जो चीख उठी वह आज भी चित्तौड़ के खण्डहरों में गूँज रही होगी। माँ के मीठे दुलार में सोया हुआ चंदन आज तक भी उस दुलार की छाया में सोया हुआ होगा। खूबी !

जीजी आगे कुछ कह नहीं सकी, उसका गला भर आया था, आँखों से आँसू झर रहे थे। खूबीलाल की आँखें भी तर हो गयी थी।

www.rajteachers.com

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

मर्दानी	–	मर्दों जैसा काम करने वाली
दृष्टि	–	नजर
पातकी	–	पापी
स्वेच्छा	–	अपनी इच्छा
कालग्रस्त	–	मृत्यु को प्राप्त
निधन	–	मृत्यु
षड्यंत्र	–	साजिश
खंडहर	–	टूटे घर
निष्कंटक	–	काँटे रहित, बाधा रहित
अनभिज्ञ	–	अनजान
निरापद	–	जिसमें कोई आपत्ति नहीं हो / सुरक्षित
भेदिये	–	भेद देने वाले
बारी	–	सफाई कर्मी
शयन कक्ष	–	सोने का कमरा
निद्रामग्न	–	नींद में डूबा हुआ

उच्चारण के लिए

मर्दानी, अंत्याक्षरी, अहिल्या बाई, कालग्रस्त, संग्राम सिंह, षड़यंत्र, कर्मचारियों, दुर्भाग्यपूर्ण, महादुष्ट, नवरात्र, निष्कंटक, अट्टहास, क्षत्रियत्व

सोचें और बताएँ

1. पाठ में किन–किन शक्तिशाली महिलाओं के नाम आए हैं ?
2. चित्तौड़गढ़ में कब अव्यवस्था फैल गई थी ?
3. उदयसिंह को महल में छिपाने से कोई लाभ नहीं था। क्यों ?

लिखें

1. निम्नलिखित पंक्तियों में दिए खाली स्थानों की पूर्ति करें

(अ) उदयसिंह को नाच–रंग में नहीं जाने दिया था, इसलिए वह रूठकर.....................

www.rajteachers.com

में ही सो गया था।

(ब) उदयसिंह पर पन्नाधाय.......................... छाई हुई थी ।

2. सही उत्तर चुनकर क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

(अ) उदयसिंह की देखभाल कौन करती थी–

(क) पन्नाधाय (ग) रानी

(ख) दासी (घ) महारानी ( )

(ब) पन्ना धाय का एक मात्र बेटा था–

(क) उदयसिंह (ग) विक्रमसिंह

(ख) चंदन (घ) बनवीर ( )

3. दासी पुत्र बनवीर क्या चाहता था ?
4. महादुष्ट बनवीर ने क्या चाल सोची थी ?
5. पन्नाधाय ने बनवीर की चाल को कैसे असफल किया ?
6. कीरत बारी ने क्या काम किया था ?

भाषा की बात

- नीचे लिखे वाक्यों में दिए गए गहरे काले शब्दों को सम्मिलित करते हुए बहुवचन के वाक्य बनाएँ। जैसे– खिड़की खुली थी । –– खिड़कियाँ खुली थीं ।

(क) मोहन ने **ताली** बजाई। ____________________

(ख) खूबीलाल ने **कहानी** सुनी। ____________________

(ग) रण में **रानी** लड़ रही थी। ____________________

(घ) **दासी** आ रही है। ____________________

- राधा ने पूरी कविता सुनाई। वाक्य में "**पूरी**" शब्द कविता की विशेषता बता रहा है।

- आप भी पाठ में आए विशेषण वाले वाक्यों की सूची बनाकर वाक्य में आए विशेषण शब्दों को छाँटकर लिखें।

वाक्य	**वाक्य में आए विशेषण शब्द**
______________	______________________
______________	______________________
______________	______________________

www.rajteachers.com

_____________ ____________________

- इन चिह्नों (, । ? !) को पहचाने।

  पाठ में ये चिह्न कहाँ आए हैं, इन्हें देखो और समझो। इन चिह्नों को क्या कहते हैं ? चर्चा करो।

यह भी करें–

- पन्नाधाय की तरह ही आपके आस–पास किसी महिला ने कर्त्तव्य पालन के लिए त्याग किया हो तो पता कर कक्षा में सुनाएँ।
- यदि आप पन्नाधाय के स्थान पर होते तो उदयसिंह को कैसे बचाते ?
- कल्पना करो कि पन्नाधाय ने अपने पुत्र का बलिदान नहीं दिया होता तो क्या होता ?

> जो व्यक्ति शक्ति नहीं होते हुए भी मन से हार नहीं मानता है, उसको दुनिया की कोई भी ताकत हरा नहीं सकती।
>
> –चाणक्य

www.rajteachers.com

16 दृढ़ निश्चयी सरदार

'सरदार' और 'लौह पुरुष' के नाम से प्रसिद्ध वल्लभ भाई का नाम बड़ी श्रद्धा और आदर के साथ समूचे देश में लिया जाता है। उनका जन्म 31 अक्टूबर, 1875 ई. को एक कृषक परिवार में गुजरात के बोरसद तालुके के करमसद ग्राम में श्री झवेर भाई के घर हुआ था। इनके पिता श्री झवेर स्वतंत्रता संग्राम के एक वीर सैनिक थे। स्वाभिमान और देशभक्ति इन्हें अपने पिता से विरासत में मिली। 1913 ई0 में उन्होंने बैरिस्टरी पास की। 1920 ई0 में वे असहयोग आन्दोलन में कूद पड़े और फिर देश की राजनीति पर लौह पुरुष बन कर छाए रहे। 15 दिसम्बर, 1950 ई. को वे महाप्रयाण कर गए। उनका संपूर्ण जीवन वैसे तो प्रेरक प्रसंगों से भरा पड़ा है लेकिन हम यहाँ उनके जीवन का एक प्रसंग ही बताने का प्रयास करेंगे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद सरदार पटेल स्वतंत्र भारत के प्रथम गृहमंत्री बने उन्होंने सर्वप्रथम देशी रियासतों को भारत में मिलाया और भारत को सबल बनाया। यह एक बड़ा कठिन और दूरदर्शिता का काम था। वे देश को संगठित और शक्तिशाली देखना चाहते थे।

वे स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उन्हें देश के स्वाभिमान का भी सदा ध्यान रहता था। एक बार सोमनाथ मंदिर गए। सूर्यास्त का समय था। समुद्र का दृश्य बड़ा ही मनोहारी था। सरदार समुद्र के तट पर सूर्य की ओर मुँह कर अंजलि से जल दान कर रहे थे। तीनों बार जल चढ़ाते समय उनका ध्यान समुद्र में प्रतिबिंबित होने वाले सोमनाथ के भग्न मंदिर की ओर था। तीनों बार उनके मुख से निकला, "मैं इसका पुनर्निर्माण करूँगा।"

लौह पुरुष सरदार पटेल ने लाखों भारतीयों की भावनाओं का सम्मान करते हुए सोमनाथ का जीर्णोद्धार करवाया। सरकारी कोष से धन देकर उन्होंने सोमनाथ के मंदिर का पुनः निर्माण करवाया। उन्हीं के सक्रिय सहयोग से भारत का मान बिंदु सोमनाथ का प्रसिद्ध मंदिर आज गौरव से मस्तक उठाए स्वाभिमान की कहानी सुना रहा है। दुर्भाग्यवश मंदिर पूर्ण होते समय सरदार पटेल दिवंगत हो गए। तब तत्कालीन राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने

www.rajteachers.com

सोमनाथ के मंदिर का उद्घाटन किया। यह सच है कि "आत्मसम्मान एवं राष्ट्रीय स्वाभिमान के लिए मर मिटना ही दिव्य जीवन है।"

सरदार पटेल ने बड़ी समझदारी और दूरदर्शिता का परिचय देते हुए सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराया था। सरदार ने हमें एक मार्ग दिखाया है कि हम राष्ट्रीय स्वाभिमान को किस प्रकार सुरक्षित रख सकते हैं। हमें उनके पदचिह्नों पर चलकर, उनका अनुकरण करते हुए इस दिशा में सचेष्ट रह कर निरन्तर कार्य करते रहना चाहिए। यही उनके प्रति सच्ची श्रद्धांजलि कही जा सकती है।

। जय भारत–जय स्वदेशी ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

दूरदर्शिता	–	आगे की सोच
संग्राम	–	युद्ध/लड़ाई
क्रूरता	–	नीचता / दुष्टता
कृषक	–	किसान
बैरिस्टरी	–	वकालात
श्रद्धांजलि	–	श्रद्धा प्रकट करने हेतु कहे गए शब्द
स्वाभिमान	–	गर्व
पदचिह्न	–	पैरों के निशान
पुनर्निर्माण	–	पुनः बनाना

उच्चारण के लिए

लौह पुरुष, प्रसिद्ध, श्रद्धा, शक्तिशाली, राष्ट्रीय, अत्याचार, जीर्णोद्धार, सक्रिय

सोचें और बताएँ

1. लौह पुरुष का पूरा नाम बताएँ ?
2. सरदार पटेल ने बैरिस्टरी कब पास की ?
3. सरदार पटेल का जन्म कैसे परिवार में हुआ ?

लिखें

1. सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखें

www.rajteachers.com

(अ)सरदार पटेल का जन्म भारत के किस प्रांत में हुआ था ?

(क) राजस्थान (ख) पंजाब

(ग) गुजरात (घ) कर्नाटक ( )

(ब)सरदार पटेल को और किस नाम से जाना जाता है?

(क) वीर पुरुष (ख) लौह पुरुष

(ग) धर्म पुरुष (घ) आदर्श पुरुष ( )

2. डॉ0 राजेंद्र प्रसाद ने दिव्य जीवन किसे बताया ?
3. सरदार पटेल का महाप्रयाण कब हुआ था ?
4. सरदार पटेल ने किस मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया ?
5. सरदार पटेल असहयोग आन्दोलन में क्यों कूद पड़े होंगे ?
6. सरदार पटेल का संक्षिप्त जीवन परिचय बताइए ?
7. सरदार पटेल के मन में सोमनाथ मंदिर का पुनर्निर्माण कराने का भाव कैसे जागा ?
8. सरदार पटेल द्वारा सोमनाथ मंदिर का जीर्णोद्धार कैसे करवाया, समझाएँ।

भाषा की बात

- पाठ में उद्धृत 'असहयोग' शब्द का विलोम होता है 'सहयोग' आप भी निम्नलिखित शब्दों के विलोम शब्द बताइए।

पूर्ण –

रात –

आदर –

हँसना –

जगना –

यह भी करें–

- हमारे देश के लौह पुरुष सरदार पटेल के समान और महापुरुषों की जीवनी का संकलन करें।
- आप भी महापुरुषों के चित्रों का संकलन करें।
- महापुरुषों का परिचय सारणी में भरें

www.rajteachers.com

महापुरुषों के नाम	परिचय	जन्म

- आप किस महापुरुष से प्रभावित हुए और क्यों ?
- उनके संबंध में एक लेख तैयार कर अपनी कक्षा में सुनाएँ।
- किन्हीं दो महापुरुषों के चित्र बनाएँ और अपनी कक्षा के सहपाठियों को दिखाएँ।

मुट्ठीभर संकल्पवान लोग जिनकी अपने लक्ष्य में आस्था है इतिहास की धारा को बदल सकते हैं। —महात्मा गाँधी

www.rajteachers.com

केवल पढ़ने के लिए

भारत का नक्शा

बहुत निराला भारत अपना, हिमगिरि मुकुट मनोहर हैं।
जंगल, पर्वत, नदियाँ, मिट्टी, खानें पुण्य धरोहर हैं।।
कण–कण में सूरज की किरणें, नित उग ऊर्जा भरती हैं।
अनुपम आबहवा के कारण, छह ऋतुओं की धरती है।।

कहीं रसीले फल पेड़ों पर, पंछी कलरव करते हैं।
कहीं वनों में भोर दहाड़ें, हिरन कुलाँचे भरते हैं।।
हवा, अन्न–जल रमे हुए हैं, तन–मन जीवन प्राणों में।
इसके ऋषियों मुनियों का है, चिन्तन वेद पुराणों में।।

आदि–सभ्य हम, जगद्गुरु हम, पंचशील के गायक हैं।
सत्य, अहिंसा, न्याय, धर्म के, पोषक हैं, परिचायक हैं।।
सब धर्मों का आदर करते, लोकतंत्र में निष्ठा है।
ऋचा, आयतें, शबद, प्रार्थना, सबकी खूब प्रतिष्ठा है।।

त्योहारों का देश हमारा, ढेरों मेले लगते हैं।
स्मारक, तीर्थ, किलों, महलों की, हम सब रक्षा करते हैं।।
विविध सभ्यता, जाति, धर्म ने, इसका रूप सँवारा है।
एक सभी हैं, नेक सभी हैं, सब में भाईचारा है।।

www.rajteachers.com